राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क ५८

राजस्थानी-हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य

[ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिर, पूना, गुजरात साहित्य-सभा, अहमदाबाद,
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक-
(आनरेरि डायरेक्टर), भारतीय विद्याभवन, बम्बई ।

ग्रन्थाङ्क ५८

राजस्थानी-हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

भाग २

सम्पादक

श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

एम ए, साहित्यरत्न,

राजस्थानी शोध सहायक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
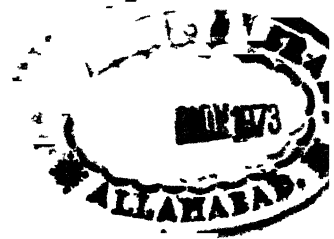
प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१८ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८३ | ख्रिस्ताब्द १९६१

प्रथमावृत्ति ५०० | मूल्य २ ७५

मुद्रक—हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर.

RAJASTHAN PURATANA GRANTHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JIN VIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Member of the German Oriental Society, Germany, Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, Vishveshvarananda Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab, Gujrat Sahitya Sabha, Ahemdabad, Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, General Editor, Gujrat Puratattva Mandira Granthavali, Bharatiya Vidya Series, Sinhghi Jain Series etc etc

* *

NO 58

Catalogue of Rajasthani Manuscripts

Part-Second

Published

Under the Orders of the Government of Rajasthan

By

The Director, Rajasthan Prachyavidya Pratishthana

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR (RAJASTHAN)

V S. 2018] [*1961 A D*

CATALOGUE OF RAJASTHANI MANUSCRIPTS

Part Second

*

Edited with introduction and appendixes by

SHRI PURUSHOTTAM LAL MENARIA,
M A , Sahityaratna,

Rajasthani Research Assistant
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

*

Published under the orders of the Government of Rajasthan

By

THE RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (Rajasthan)

V S 2018] **[1961 A D.**

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर

(Rajasthan Oriental Research Institute)

JODHPUR

उद्देश्य

१ राजस्थान मे और अन्यत्र भारतीय सस्कृति के आधारभूत सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रश, राजस्थानी, हिन्दी व अन्य भाषाओ मे लिखित प्राचीन ग्रथो की खोज करना तथा उन्हे प्रकाश मे लाना।

२ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह कर उनके सरक्षण की व्यवस्था करना और उपयोगी ग्रन्थो को सम्बन्धित विद्वानो से सम्पादित करा कर उनके प्रकाशन की व्यवस्था करना।

३ साधारणत भारतीय एव मुख्यत सस्कृत व प्राचीन राजस्थानी के अध्ययन, अन्वेषण, सशोधन हेतु अत्यावश्यक उत्तम प्रकार का सन्दर्भ पुस्तक भडार (मुद्रित ग्रन्थालय) स्थापित करना और उसमे देश-विदेश मे मुद्रित विविध विषयक अलभ्य-दुर्लभ्य सभी ग्रन्थो का यथासभव सग्रह करना।

४ सगृहीत सामग्री से शोधकर्त्ता अध्येता विद्वानो को उनके अध्ययन और अनुसधान मे सहायता पहुँचाना।

५ राजस्थान के लोक-जीवन पर प्रकाश डालने वाले विविध विषयक लोक-गीत, साप्रदायिक भजन, पदादिक भक्ति साहित्य एव सामाजिक सस्कार, धार्मिक व्यवहार तथा लौकिक आचार-विचार आदि से सम्बन्धित सभी प्रकार की सामग्री की शोध, सग्रह, सरक्षण, एव प्रकाशन करने की व्यवस्था करना।

सञ्चालकीय वक्तव्य

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर मे वर्ष १९६०-६१ तक १५,६२५ हस्तलिखित ग्रन्थो का सग्रह किया जा चुका है। इनमे से वर्ष १९५७-५८ तक प्राप्त ग्रन्थो की सूची "राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १" प्रकाशित की जा चुकी है। अब वर्ष १९५८-५९ मे प्राप्त ७७४ राजस्थानी ग्रन्थो का विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची के रूप मे प्रकाशित किया जा रहा है।

इस सूची का सम्पादन हमारे प्रतिष्ठान के शोध सहायक श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम ए, साहित्यरत्न ने योग्यतापूर्वक किया है। श्री मेनारिया ने परिश्रमपूर्वक ग्रन्थ-सम्बन्धी विशेष ज्ञातव्य प्रस्तुत किये हैं और परिशिष्ट के अन्तर्गत कतिपय ग्रन्थो के आदि-अन्त देने के अतिरिक्त ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका तैयार की है। सन्तोष का विषय है कि सूचीपत्र के निर्माण मे निर्धारित रीति-नीति का तत्परता-पूर्वक पालन किया गया है।

प्रस्तुत सूची-पत्र के प्रकाशन-व्यय का आधा भाग केन्द्रीय सरकार के वैज्ञानिक और सास्कृतिक मन्त्रालय ने प्रान्तीय भाषा-विकास योजना के अन्तर्गत प्रदान किया हैं, तदर्थ हम आभारी है।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।

विषय - तालिका

सकेत - तालिका

१. रचना-काल — र का

२ लिपि-काल — लि का

३ लिपिकर्त्ता — लि क

४. रचना स्थान — र.स्था

५ लिपि-स्थान — लि स्था

६ ग्रन्थाङ्कसे तात्पर्य प्रतिष्ठानकी ग्रन्थ - प्राप्ति पञ्जिकाकी सख्या (Accession Number) से है।

७ ग्रन्थाङ्कके साथ कोष्ठकमें दी गई सख्या सम्बद्ध ग्रन्थकी कृति-सख्या है।

८ लिपिसमय और रचनाकालके निर्देशन हेतु ग्रन्थोके अनुसार सर्वत्र विक्रमी सवत् प्रयुक्त हुआ है।

६. पुष्पाङ्कित "*" ग्रन्थका विशेष परिचय परिशिष्ट सख्या १ में प्रस्तुत किया गया है।

सम्पादकीय प्रस्तावना

राजस्थान और इससे संबद्ध प्रदेशों के भूतपूर्व राजाओं, जागीरदारों, विद्वज्जनों, साहूकारों, मन्दिरों, मठों, उपाश्रयों तथा राजकीय सार्वजनिक संस्थानों के अधिकार में राजस्थानी भाषा में लिखित प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ प्रचुर संख्या में उपलब्ध होते हैं। भारतीय साहित्य, इतिहास, राजनीति और दर्शनादि विषयों के अध्ययन को पूर्ण करने में इन ग्रंथों का विशेष उपयोग और महत्त्व माना गया है, इसलिये अनेक विदेशीय संग्रहालयों और पुस्तकालयों में भी राजस्थानी भाषा में लिखित प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह एवं संरक्षण विशेष प्रयत्न से किया गया है। विद्वज्जगत की जानकारी और अध्ययन के लिये ज्ञात समस्त राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्रों का प्रकाशित होना नितान्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य है, तदनुसार रा० प्रा० वि० प्रतिष्ठान के केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर में संगृहीत २१६६ ग्रंथों का परिचय "राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ-सूची, भाग १" के रूप में गत वर्ष प्रकाशित हो चुका है। इसी क्रम में "राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ-सूची, भाग २" में ७७४ ग्रंथों का परिचय प्रस्तुत है।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के सूची-पत्र मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं—

१ सूचनात्मक, और
२ विवरणात्मक।

प्रस्तुत ग्रंथ-सूची सूचनात्मक है, जिसमें ग्रंथ-सम्बन्धी कर्ता, लिपि-समय, पत्र-संख्या, रचना-काल, लेखन-स्थान, लिपिकर्ता आदि के विषय में अत्यन्त संक्षेप में सूचनाएँ दी गई हैं। स्पष्ट है कि "विवरणात्मक" सूची की पूर्ति "सूचनात्मक" से नहीं की जा सकती। सर्व प्रथम ज्ञात संपूर्ण प्राचीन राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थों के परिचयात्मक सूचीपत्रों का प्रकाशन विशेष आवश्यक है और इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ-सूची तैयार की गई है।

इस ग्रंथ-सूची में सङ्कलित कृतियों में कबीर सम्बन्धी रचनाओं (क्रमाङ्क ६७ से ७६), कृष्ण-रुक्मिणीरी वेली, सचित्र (क्रमाङ्क १८१), द्रौपदी चउपई (क्रमाङ्क २५०), नागराज पिंगल (क्रमाङ्क ३२९), पञ्चसहेलीरा दूहा (क्रमाङ्क ३६२), पन्दरमी विद्यारी वार्ता, सचित्र (क्रमाङ्क ३७९), पृथ्वीराज पवाड़ा (क्रमाङ्क ४१३), रसरतनागर (क्रमाङ्क ५१६), राधावल्लभ ख्याल,

ख्यालायत (क्रमाङ्क ५३३), रावत प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ हरिसिंघोतरी वात (क्रमाङ्क ५५३), मुंहणोत जोगीदास कृत शत्रुभेद (क्रमाङ्क ६३९) और महेश कवि कृत हमीर रासो (क्रमाङ्क ७६४) विशेष उल्लेखनीय हैं। कतिपय महत्त्व-पूर्ण ग्रंथों के आदि-अन्त भी सूची के अन्त में परिशिष्ट सं० १ के रूप में दिये गये हैं। समस्त ग्रंथों के परिचय वर्णक्रमानुसार लिखे गये हैं और पाठकों की सुविधा हेतु परिशिष्ट सं० २ में कर्तानामानुक्रमणिका भी प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत सूची मे १६ वीं सदी से २० वीं सदी विक्रमी तक रचित एवं लिखित कृतियों का संकलन किया गया है। उदाहरणार्थ प्राचीनतम रचित कृति छीहल कवि कृत "पञ्चसहेलीरा दूहा" (क्रमाङ्क ३६२) वि० स० १५७५ की है और प्राचीनतम लिखित प्रति रतनचरित्र कृत "सम्यकत्व-कौमुदी" (क्रमाङ्क ६९३) वि० स० १६०६ की है। सूची की अधिकांश कृतियां १८ वीं और १९ वीं सदी विक्रमी में रचित और लिखित हैं। सूची से प्रकट है कि ग्रंथ-रचना और लेखन का कार्य मुख्यतः राजस्थान, मालवा और गुजरात के विभिन्न स्थानों में हुआ है, क्योंकि सम्बद्ध काल के प्रमुख भारतीय विद्या-केन्द्र इसी क्षेत्र में विद्य-मान थे। प्रस्तुत सूची से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रंथों की रचना और लेखन सम्बन्धी कार्यों में पुरुषों के साथ-साथ अनेक विदुषी महिलाएँ भी सक्रिय भाग लेती थीं।

सूची के ग्रंथ-परिचय-पत्र श्रीयुत् नाथूलालजी त्रिवेदी, साहित्याचार्य के सहयोग से तैयार किये गये हैं। श्रीयुत् अगरचन्दजी नाहटा ने सूची को देख कर आवश्यक संशोधन करने की कृपा की है। सूची का निर्माण परम श्रद्धेय पद्मश्री मुनि जिनविजयजी और श्रीयुत् गोपालनारायणजी बहुरा के निर्देशन में किया गया है। तदर्थ मैं उक्त सभी महानुभावों के प्रति आभारी हूँ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर
श्री गणेश चतुर्थी, सं० २०१८ वि०

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया,
एम. ए., साहित्यरत्न
सम्पादक

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
१	६६०२	अजनारास		१८२७	१२	लि क –गुमानी। लि स्था –पाली।
२	१००५२ (२३)	अजनासतीनोरास		१८६७	१–३०	
३	८२६८	अजनासतीरास		१७वीं	१२	
४	८५३६	अजनासुन्दरी चउपई		१७६६	१७	लि. क –सिद्धिविलासगणि, मरोट्ट (मारोठ ?)
५	६८५३	अजनासुन्दरीरास		१८७३	१७	प्रथय पत्र अप्राप्त। लि क –अजबसुन्दर। लि. स्था –मेदिनी तट।
६	६८६१(७)	अतरीकजीरो स्तवन		२०वीं	३१वा	
७	१०१८० (३२)	अतरीकपार्श्वनाथस्तवन		१६वीं	७७–७६	
८	१००५१ (२१)	अतरीकरो स्तवन		१८८५	१४६–१५०	
९	१०१८० (४२)	अतरीकस्तवन		,,	११६–१२५	
१०	१०२४८ (११)	अइमत्तरिषिसज्झाय		१८१२	६७, ६८	
११	८७२०	अगडदत्तरास	श्रीसुन्दरवाचक	१६८१	२०	
१२	८८४२	,,	हरचद	१६६२	१६	
१३	८४००(३४)	अजितशातिस्तव	पाश[र्श्व]चद	१६वीं	७८–८०	
१४	७६६४	अठार भार वनस्पतिनो परिमाण		१९२३	३०	लि क –हरषचद्र, रामपुरा (कोटा)।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५	८१२४	अढ़ीदीपविचार		१९वीं	६	
१६	१०१८० (२७)	अतीत–अनागत–वर्तमान चौबीसी-स्तवन		,,	६८वा	
१७	१०६७७	अद्वैताद्भुतनाटक	दरजी देवकृष्ण	१९३५	४०	लि क.–साहु हीरादास।
१८	८५२७	अध्यात्मसारप्रश्नोत्तर	मुनि कुवरविजय	१८८५	२२७	लि क –ऋषि हुकमचदजी, पाली मध्ये।
१९	८४२२(३२)	अनाथीधनरिषिदसाण	हीरानन्द सूरि	१८वीं	९८–१०५	
२०	१०१८०(३)	अनाथी सिद्धा		१९वी	२२वा	
२१	८४४७	अमरसेन-वयरसेन-प्रबन्ध		१८वीं	२०	अपर्ण
२२	८१०८	अयवती-गजसुकुमाल-रास	जिनहरष	१९वीं	९	र का १७४१
२३	८१३४	अयवती-सुकुमाल-चरित्र	,	१८वीं	५	,, ,,
२४	९१५२(५)	अयवती-सुकुमाल चौढालियो		१९०५	६९–७०	
२५	९८६१(९)	अरजिनस्तवन		२०वी	३४वा	
२६	९७८०	अलोवणा		१८वी	६	
२७	८४२८(४)	अष्टप्रकारी पूजा		२०वीं	१९–६१	
२८	९८६१(१८)	,, ,		,,	८३–९६	
२९	९८६१(१२)	अष्टमीनु स्तवन		,,	४१–४४	
३०	८८३०	अष्टापदमहातीर्थस्तवन	समरो	१७६०	५	लि क –तिलकरुचिमुनि। लि स्था.–पट्टणानगर।
३१	८३२७	आगमसारोद्धार	देवचद	१८७५	५५	र का १७७६। र स्था मारोठ। लि क –मानसुन्दर। लि स्था –बीकानेर। प्रथम पत्र अप्राप्त।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
३२	८४२९(७)	आचार्य चैत्यवन्दन तथा आचार्य स्तवन		२०वी	४६, ४७	
३३	९७०१	आठवीं वार्ता		१८५८	१५	लि क ज्ञानचद
३४	८९०८(१)	आणदश्रावक चौपई	श्रीसार	१८९८	१–१४	लि क –रूपचद थावर्या बजार-मध्ये रतलाम नगरे।
३५	८११९	आणदसिद्धि[सधि]		१८वीं	११	
३६	१००५२(३)	आत्मनिन्दा		१८९७	९८–१०५	
३७	९५६३	आत्मबोध		२०वीं	२८	र का १९३०। पत्र स १ और २ अप्राप्त।
३८	१०१८० (६७)	आत्मभास		१९वीं	२१३–२१५	
३९	१०१८० (४६)	आत्मशिष्यागीत		,,	१३५–१३८	
४०	१०१८० (२५)	आत्मशिक्षासज्झाय		,,	६४वा	
४१	१०१८० (३५)	आत्मसज्झाय		,,	८५–८६	अन्तिम पत्र पर गोगागीत, नेमिनाथ गीत आदि हैं।
४२	१०१८० (३४)	आत्मज्ञानसिझाय		,,	८५वां	
४३	१०१८० (४४)	आतमसझाय		,,	१३२–१३४	
४४	८४००(३१)	आदिजिनगीत	करमसिंह		७३वां	बीकानेरके किसी जैनमदिरमे स्थित प्रतिमासम्बन्धी स्तोत्र।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
४५	८२८७	आदिनाथविवाहलो		१७४४	१३	
४६	१०१८० (५६)	आदिनाथस्तवन		१९वों	१८१	
४७	७९५३	आनन्दसधि		१८७९	६	र का १६१८। लि स्था देशणोक (बीकानेर) पत्र १, २ अप्राप्त।
४८	८१५५(अ)	आर्द्रकुमारीकथा		१९१९	१९	पत्र सख्या ६ अप्राप्त।
४९	९१८०	आरतीमगलदीवक			१०	लि. क –प गोकुलसुन्दर।
५०	९५६०	आलोयणनी विधि		१८वी	५	प्रथम पत्र अप्राप्त।
५१	८४२९(२२)	आलोयणस्तवन		२०वी	७३–८८	
५२	९५५२	आषाढभूति चोपई		१८७४	६	लि क –ऋषि कर्मचन्द। लि स्था –विक्रमपुर।
५३	१००५२(६)	आषाढभतिजीरो पाचढालियो		१८९७	११७–१२३	
५४	१०१८९(३)	आसोरेटना दूहा		१८५०	७३–७७	
५५	९००९	इलापुत्र चौपई		१८वी	५	
५६	९०३४	उत्तराध्ययनकथा		१७८१	९०	
५७	९७०३	उपकेशगच्छसाराश	घनसार	१६२५	६	लि क –वाग्देव सुन्दर। लि स्था –राजलदेसर।
५८	८४२९(८)	उपाध्यायचैत्यवदन		२०वी	४७, ४८	
५९	१०१८० (७३)	ऋषभजिनस्तव		१९वी	२२७–२२८	
६०	८४००(३६)	ऋषभदेवगीत	समरचद्रसूरि	,,	८१वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१	८४००(१९)	ऋषभदेवजीके गीत		१९वी	५८–६०	
६२	९७०२	ऋषभनाथको स्तवन		१९०३	३१	लि क –हसमुन्दर, वेणोर मध्ये। खण्डित।
६३	९८६१(१०)	ऋषभस्वामीस्तवन		२०वीं	३५वा	
६४	९१२७(३)	ऐकलवाराहरी दाद्यालारी वात		१९वी	३४–५०	लि क –नाथू व्यास
६५	८३२५	औषधिसग्रह		१७वी	२०	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि क –छत्रतिलक ' लि स्था.–सुखेडा।
६६	९२९३	कक्काबत्तीसी		१८वीं	२२	
६७	८७०४(१)	कबीरके पद		१८४९	१	लि क –भोजजी पोकरणा, जोधपुर।
६८	९८३२	कबीरजीकी वाणी	कबीरदास	१८१६	१०६	गुटका, जिसमें सुन्दरदास कृत ज्ञानसमुद्र भी है।
६९	८५५९(२)	कबीरजीकी वाणी साखी आदि	,,	१८५५	४–९६	जीर्ण गुटका।
७०	९९५९(१)	कबीरजीकी साखी	,,	१९वीं	८	प्रथम पत्र अप्राप्त।
७१	८५०१(५)	कबीरजीको अग	,,	१८वीं	२३४–२८१	अन्तमें साधोकी आरतीके १८ पत्र है।
७२	८५६१(१)	कबीरजीको कृत	,,	१९ वी	१५–६६	
७३	९७१८	कबीरवाणी	,,	,,	३४४	
७४	९७३४	कबीरसाहबको ग्रन्थ	,,	१८४८	९६	लि क –मानदास साधु।
७५	८५६२(६)	कमलकुवर बाईरो गीत			७३–७४	
७६	८८३४	कमलावतीरास	विजयभद्र	१७वी	३	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
७७	८९०८(४)	कयवन्ना चौपई	जयरग	१८९८	७–९७	लि क –रूपचद । लि स्था –रतलाम ।
७८	८९७९	,, ,	,,	१९२८	३७	लि क –प्यारचद ।
७९	१००५५	कयवन्नाजीरी चौपई		२०वीं	४३	
८०	८०५.	कर्मनी बात	सामलदास	१८७४	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
८१	९८१५	कर्मविपाक		१७६०	२	लि क –प्राणविजय ।
८२	८८४३	करगडु चोपई	मतिशेखर	१७वीं	१०	
८३	१०१८९(४)	करणनु आख्यान		१८५०	७८–११३	
८४	१००५१ (१२)	करमसज्झाय		१८८५	१३३–१३४	
८५	८७४७(४)	करुणाबत्तीसी	माधोदास	१९वीं	२०–२३	
८६	१०५६०(१)	कल्पवृक्षदानरी विगत			१, २	
८	७९१६	कल्पसूत्र सटबार्थ		१७७९	११६	लि क –लखाजी । लि स्था –ावा ।
८८	९६७६	कल्पसूत्र टबार्थ		१८वीं	१९	
८९	९६९९	कल्पसूत्रभाषा		१८८३	१००	लि क –हर्षचद ।
९०	१०५१०	कल्पसूत्रभाषा		१७वीं	१२४	
९१	९७८३	कल्पसूत्रभाषावृत्ति	लक्ष्मीवल्लभ	१८१७	२५०	पत्र स १-५ अप्राप्त । लि क हससुन्दर । लि स्था – बेगम बाजार मुसाया तटे ।
९२	७८९१	कल्याणमन्दिरस्तोत्र बालावबोध	कुमुदचंद्राचार्य, अपर नाम सिद्धसेनाचार्य	१६५३	६–२३	लि क हीरा साध्वी ।

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
९३	९७३२ (१)	कायापाञ्जी	कबीर	१९वीं	१–३	
९४	८६९३ (२)	किशनबावनी	किशन		३६–५२	अन्तमें पृ १११ तक पद छप्पय आदि हैं।
९५	८५१३	कीमिया शहादतको अनुवाद	यू मुहम्मद गजाली	१९वीं	१७६	अनु. अडाणजी सेवापथी।
९६	७८६१ (७)	कृपालीस्तोत्र		१९१५	४०,४१	लि क –भज्जूराम
९७	१०६८०(२)	कृपासिंधु किसनहरीपदमाला		१९वीं	५–८	
९८	१०१८९(६)	कृष्णचरित्र		१८५०	१४६–१५७	
९९	९१४४	कृष्णरुक्मणीरी वेली	प्रथीराज	१७४७	३२	कल्पवल्ली टीका। लि क –मुनि महेसदास।
१००	८२५३	,, ,,	,,	१८००	४०	लि. क –धर्मसुन्दर। लि स्था -मेडता।
१०१	९२५२ (१)	,, ,,	,,	१७७४	१–१८	भूलसे पत्र स १२के पश्चात् १४ लिखित है।
१०२	९४२० (१)	कृष्णरुक्मिणी वेली सचित्र			१३१	चित्र सख्या ६४
१०३	८९३१	कोकमजरी	आनद	१८३२	२५	लि क –सवाईराम मेव।
१०४	८२०७	कोकशास्त्र	नरबद	१९७६	८६	र का १६५६। लि क –हरि-विजय, बम्बई।
१०५	९०८६	कोकशास्त्रभाषा		१९वीं	४०	
१०६	९०५२ (१)	कोकसार	आनद	१९१४	६–२३	लि क –नदराम व्यास, उदयपुर।
१०७	९ ५४ (४)	कोकसार		१८१०	१–२१	
१०८	९७३० (१)	कोकसार	आनद कवि	१८२१	१–४५	लि क –ऋषि दयाराम।
१०९	१००५(१३)	खदग चौढालियो		१९वीं	३१–३८	

क्रमांक	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
११०	८४२२ (१८)	खिमाछत्तीसी	समयसुन्दर	१८वीं	८०–८२	
१११	६४६३	खेत्रसमास		१७वीं	८	
११२	६४६४	ग्रहणवारफल		१८३३	१०	अपर नाम फल शनिका लिखित है। लि क –प कनकविधान
११३	७६०१	ग्रहलाघवटीका		१८६३	३६	अपूर्ण
११४	६६६७	गजानन भजनावली बही		१६वी	४७	,,
११५	८४६३	गणितसारसग्रहभाषा	महावीराचार्य	१६२४	१२७	,,
११६	८४६४	,, ,,	,,	१६२५	१०२	भाषाकार अमीचद
११७	१०२०६	गीताभाषा		२०वी	१४६	अपूर्ण
११८	८५६१(२)	गीतामाहात्म्यभाषा		१७५४	६६–१०४	लि क -रूपदास, गरीबदासशिष्य
११९	८७७६	गीदडरासो		१६वी	२	
१२०	६८६१(११)	गुणमञ्जरी		२०वी	३६–४१	
१२१	८५३५	गुणावलीरी चउपई		१८२४	१५	लि क –रामचद्र। लि स्था –सादडी।
१२२	८४००(६)	गुरुगीत	पद्मचद सूरि		३७, ३८	र क. १७७५।
१२३	१०१८० (७०)	गोडी पारसस्तवन		१६वी	२२३वा	
१२४	१०१८० (७२)	गोडीस[स्त]व		,,	२२७वा	
१२५	८४००(४०)	गोडीजी गीत	देवीचद	,,	८५–८७	
१२६	१०१८०(६)	गोडी पार्श्वनाथछद		,,	२८–३०	
१२७	८४००(१५)	गोडी पार्श्वनाथस्तवन		,,	४५–५२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२८	८१६०	गौडीपार्श्वनाथ	कुशललाभ	,,	६	
१२९	१०१८० (८)	गौडीपार्श्वनाथस्तवन		१९वी	२८वा	
१३०	१०१८० (६०)	गौडीयपार्श्वनाथस्तवन		,,	१८१–१८९	
१३१	१०२४८ (९)	गौडीयपार्श्वनाथस्तवन		१८२२	६४–६६	
१३२	९४६०	गौतमगाथा		१८१०	१२५	पत्रसंख्या १–१३ तक अप्राप्त ।
१३३	१००५१ (७)	गौतमजीरी वीनती		१८८५	११३वा	
१३४	८४२२ (४०)	गौतमजीरो स्वाध्याय		१८वी	१२५वा	लि क —रामचंद्र ।
१३५	८२४३ (२)	गौतम दीपालिकास्तवनम्		१७वी	५	
१३६	८१५४	गौतमपृच्छा		१८वी	६	लि क —मानसिंह ऋषि ।
१३७	१००५९ (१)	,, ,,		१६वी	१–४	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
१३८	१०१८० (४१)	,, ,,		१९वी	१११–११९	अपूर्ण ।
१३९	१०६५०	,, ,,		१८३४	९९	लि क —मुनि खुशालविजे, मुनि हेतविजयशिष्य । लि स्था —रतभतीर्थ ।
१४०	८१५५ बी	गौतमपृच्छाके सौ बोल		१९वी	११	
१४१	१०२४८ (४)	गौतमपृच्छाचौपाई		१८१२	४२–४९	
१४२	९०१९	गौतमपृच्छा बालावबोध	सुधाभूषण	१९वीं	३८	
१४३	८४२८ (६)	गौतमरास		२०वी	६४–६६	
१४४	९६१३	,, ,,	विजयभद्रसूरि	१९वीं	१०	लि क. प्रेमसागर ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४५	८४२२(१४)	गौतमरासो		१८वीं	६८–७२	
१४६	८४००(१)	गौतमस्वामीअष्टक	लावण्यसमय	१९वीं	१, २	
१४७	८४२९ (२१)	,, ,,		२०वी	७१-७२	
१४८	६५२४ (१)	गौतमस्वामीजीरो रास		१८वी	१–४	
१४९	६९४३	गौतमस्वामीढाल		१९वी	२४	लि क –बदीचद।
१५०	१००५ (६)	गौतमस्वामीनो रास		१८७४	२६–३२	
१५१	८४२८ (८)	गौतमस्वामीरास		२०वी	६८–८५	
१५२	८३६७	गौतमस्वामीरो स्तवन		,,	४०	
१५३	८४९८(४)	गोरख छद		१८वीं	२४–२७	
१५४	८४२८(२२)	गोरखपत्रो		२०वी	३	
१५५	८०९२	चतुर्विंशतिजिनस्तव	जिनराज	१८७१	६	लि क –दौलतराम।
१५६	८११६	चतुर्विंशतितीर्थंकरगीत		१९वी	४	
१५७	७९७२	,, ,,		१८७८	७	लि क –खेमचद।
१५८	९३३२	चतुरमुकुटकी कथा		१८८१	२३	
१५९	९११९	चतुरमुकुटकी वारता		१८८२	१०७	
१६०	८५६०(१)	चन्द्रकुवारकी वार्त्ता		१८६८	५–१८	
१६१	६१५२(१)	चन्द्रचरित	मोहनविजय	१९००	१–४७	
१६२	८८२६	चन्द्र लेहाचौपई	मतिकुशल	१८३९	२१	लि क –चैनराम। लि स्था –अजमेर।
१६३	८२६२	चन्द्ररास	मोहनविजय	१७८३	१३७	लि क –मोहनविजय। लि स्था –पाडलिया।
१६४	६९५४	चन्द्रार्की		१७वीं	८	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसङ्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६५	८४२२(११)	चन्दणबालासज्झाय	अजितदेवसूरि	१८वी	५३–५७	
१६६	८५६२(१२)	चन्दनमलयागिरिरा दूहा		१७६५	११५–१३१	
१६७	७८८०	चन्दरास	मोहनविजय	१८११	७३	लि क –लक्ष्मीविजय। लि स्था –सूरत।
१६८	१००१५	,,	,	१७७३	७०	प्रथम पाच पत्र अप्राप्त। लि स्था –रामपुरा, कोटा।
१६९	८४६६	चरणदासजीरो सरोधो	चरणदास	१८वीं	२८	
१७०	८४२६(१२)	चारित्र्यचैत्यवद		२०वी	५२–५३	
१७१	८३३४	चित्रसेनपद्मावतीचौपई	रामविजय, दयासिहमुनिशिष्य	१९वी	३०	र का १८१४।
१७२	८४२६(२७)	चैत्यवदन		२०वी	११० वा	
१७३	८४२६(१४)	,,		,,	५४–५८	
१७४	६६०७	चैत्यवदनसूत्रनो बालावबोध		१८वीं	१००	अपूर्ण।
१७५	८१८२	चौबीसजिनस्तव		,,	१०	लि क –माणिकविजय।
१७६	६१५२(३)	चौबीसजिनस्तवन		१९००	५६–६०	
१७७	१०१८० (६३)	चौबीसतीर्थंकर पचबोलस्तवन		१९वीं	१९७–१९९	
१७८	१००५२(८)	चौबीसतीर्थंकर स्तवन		१८९७	१३१ वा	
१७९	८४०० (४१)	चौबीसी	देवीचदऋषि	१९ वी	८७–८९	
१८०	६६७२	चौबीसीसूत्रार्थी	आनदघन महाराज	,,	३६	अपूर्ण।
१८१	८५६२ (८)	चौहानपृथीराजरो छद			७६–७९	*
१८२	८३१३	छठो भुवनद्वारवर्णन		१८७४	१६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८३	१०६८०(३)	छत्तीस कारखानाका नाम			८–९	
१८४	१०१८० (२८)	छन्नू जिननामस्तवन		१९वीं	६९वा	
१८५	९२५६	छहुकाय आदि		१८वीं	१३	
१८६	८५५९ (१)	छीतमजीकी जखडी		१८५५	१–४	जीर्ण गुटका ।
१८७	९२५४ (५)	जगदम्बरी नीसाणी		१९वी	१–८	
१८८	९४९७	जगावधी		१८वी	६	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि क.–बुधसुन्दर ।
१८९	८६६९	जन्मपत्रिकागणितकमभाषा		१७७२	१५	लि क.–अमृतसागरगणि । लि स्था –श्रीमडपिका बन्दर ।
१९०	८३३७	जन्मपत्रीनिर्माणविधि		२०वीं	८	
१९१	८५६२ (९)	जनम बत्तीसी	भगतराम पचोली	१७९५	७८–९१	र का १७९५। *
१९२	७९३७	जम्बूचरित्र	मनरूप	१८९९	३६	लि क –रगविजय। लि स्था –भावगढ । र स्था नाहरगढनगर ।
१९३	८५५४	,, ,,		१८२६	२६	लि क –सुजाणऋषि ।
१९४	८४५८	जयपुरराजाओकी वशावली		१९वी	२७२	आदिके ३९ पत्र तथा पत्र स ५५ से ५८ अप्राप्त ।
१९५	१०१८६(१)	जलालगहाणीरी वात		१८५३	१–६३	
१९६	१०६७५ (३)	,, ,, ,,		१८११	५७–८२	'पोथी दाउदलाकी नकल ।'

क्रमाक	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९७	८५६२ (५)	जसोतसिह झाला मालजीरो गीत	भीमजी आढा		७१–७२	
१९८	८२८६	जाम्बवतीचौपई	सूरसागर	१८वी	१०	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
१९९	१०१८० (४०)	जिनगीत		१९वीं	१०९, ११०	
२००	९५०२	जिनरस		१८७५	१०	लि क –अखैचदऋषि । लि स्था –स्यजैहनाबाद (शाहजहानाबाद) ।
२०१	९५२२ (५)	जिनराजचैत्यवदन		१७६८	४	
२०२	९५७३	जिनरामायण		१८वी	१३४	अपूर्ण ।
२०३	८४००(३२)	जिनस्तवन	पाशचद	१९वी	७३-७५	
२०४	८४२२(१७)	,, ,,		१८वीं	७९–८०	
२०५	१०२४८ (१७)	,, ,,		१८१३	१२६–१३०	
२०६	८४००(२७)	जिनस्तुति	कनककीर्ति	१९वीं	६९–७०	
२०७	१०१८० (३९)	जिनस्तुति और गोडीपाश्वनाथस्तवन		,,	१०५–१०९	
२०८	९८६१ (८)	जिनस्तोत्र		२०वीं	३२–३३	
२०९	८०४६	जिनसूक्तीमाला		१८वी	९	
२१०	१०२४८ (१२)	जिसलमेरमडण पार्श्वनाथस्तवन		१८१२	६८–७०	
२११	८४२२	जीवकायासज्झाय		१८वीं	९७–९८	
२१२	८४०३ (२)	जीवविचारप्रकरण		२०वीं	२१–५१	सबालावबोध ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१३	९५२२ (१)	जीवविचारप्रकरण		१७६८	७	लि क –माणिक्यचद्र ।
२१४	९५२२(९)	,, ,,		१८वीं	६–८	लि क –मुनि माणिक्यचद्र ।
२१५	९९३८	जैनतीर्थंकरपूजापद्धति		,,	७–३८	अपर्ण ।
२१६	८४०३(१०)	जैनतीर्थवर्णन		२०वी	१००, १०१	
२१७	८५०८	जैनशतक		१८६५	५३	
२१८	९२५७ (४)	जैनशतम्		१८वीं	१–४	
२१९	८१७५	जैनसस्कारविधि		,,	२३	
२२०	९६०८	जैनसप्रदायचर्चा		,,	१०	
२२१	१००५१ (१५)	डाढणजीरो तवन		१८८५	१३८–१३९	
२२२	१०१८० (५७)	ढालरागगीतसग्रह		१९वी	१६३–१७८	
२२३	७८९२	ढालसागर हरिवशप्रबन्ध	गुणसागर	,,	७१	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
२२४	७९०६	,, ,,	,,	१८४७	४०	लि क - शौर्यसौभाग्य । लि स्था –नारायणगढ़ ।
२२५	७९१४	,, ,,	,,	१९वी	३६	
२२६	७९२१	,, ,,	,,	१७९६	१३०	लि क –कुशललाभ ।
२२७	८२९६	ढोलामरवणचौपई		१८वीं	१९	
२२८	८४२६	ढोलामारवणरीचउपई		१६१३	२५	लि क –प दयाशेखर ।
२२९	९०५२(२)	,, ,,	कुशललाभ	१८०२	१–५९	लि स्था –जावदग्राम महाराणा जगतसिंहजीराज्ये ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२३०	१०१८६ (२)	ढोलामारवणरी वात		१८५३	१–७३	लि क –नदराम।
२३१	१०६६० (१)	ढोलामारू, सचित्र			६२	चित्र स ६८।
२३२	९ ५२ (५)	ढोलामारूरी वात		१८वी	१–३७	लि क –मित्रराम भट्ट दसोरा।
२३३	८४२९ (१३)	तपचैत्यवदन		२०वी	५३–५४	लि क –हुकमचद।
२३४	१०१८० (७१)	तमाकूंगीत		१[illegible]वी	२२४–२२६	
२३५	१०१८० (१२)	तिथिनक्षत्रविचार		,,	३३–३९	
२३६	८४२२ (२९)	तीर्थंकरतवन	साधुविजय	१८वीं	६५–६६	
२३७	८१८३ (३)	तीर्थमाला	समयसुन्दर	,,	१५–१९	
२३८	८४२८ (७)	तीर्थावली		२०वीं	६६–६८	
२३९	८४०० (२४)	तीरथधमाल	,,	१९वी	६५–६६	
२४०	८०९७	तेतलीपुत्र मुनीसचरित्र	देवआनद, ज्ञानचद्रशिष्य	१८वीं	६	
२४१	१०१८० (६८)	तेतलीपुत्राध्ययन		१९वी	२१५–२१७	
२४२	१०१८० (६४)	तेरह काठिया		,,	१९९–२००	
२४३	१०२४८ (३)	तेरह काठियास्वाध्याय		१८१२	४०–४२	
२४४	८०९०	तेरह ढालसाधुवदना		१८वीं	८	तेरहवीं ढाल अपूर्ण है।
२४५	१००५० (८)	तेवीसपदवीरो स्तवन		१९वी	३६–३८	
२४६	८४२२ (२३)	थभणपारसनाथतवन		१८वी	८६–८७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२४७	१०१८० (४८)	थभणपारसस्तवन		१६वीं	१४१–१४१	प्रतमे ''देसी बगालानी'' है।
२४८	१०१८० (५५)	द्रव्यादिविचार		,,	१५२–१५७	
२४६	७६३५	द्रौपदीकथा		१७वीं	१६	अपूर्ण।
२५०	८७२२	द्रौपदीचउपई		१६५२	११	*
२५१	७६०३	द्रौपदीचरित्र	कनककीर्ति जिणचदशिष्य	१८वीं	४१	र स्था जैसलमेर।
२५२	८४०३ (३)	दण्डक		२०वीं	५१–६८	
२५३	८४२६(१०)	दरसनचैत्यवदन		,,	५०–५१	
२५४	६५६५	दशदृष्टान्तविस्तर	अभयधर्म	१८वीं	५	र का –१५७६।
२५५	१००५२ (१६)	दशभवस्तुति		१८६७	१३६–१४१	
२५६	८१७३	दशविध यतिधर्मसज्झाय	सुखसागर कवि	१८०६	१३	
२५७	१०१८० (६६)	दशवैकालिकसूत्र		१६वीं	२०१–२१२	
२५८	१००५० (१४)	दशार्णभद्रराजर्षिचौढालियो		,,	४०–४२	
२५६	८४००(२२)	दादागीत		,,	६२वा	
२६०	८४०० (१०)	दादाजिनकुशलसूरिगीत		,,	३८–३६	
२६१	८४००(१२)	दादाजिनदत्तसूरिगीत		,,	४१–४२	
२६२	८४००(१४)	दादाजीगीत	समयसुन्दर	,,	४२वा	
२६३	६४३० (७)	दादूजीकी वाणी		१८५८	१–२३३	लि क – भागोतदास, मारवाड मध्ये।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६४	८५६४ (१)	दादूजीको अंग, सचित्र		१९वीं	१–५१	चित्र सं १३।
२६५	८५०१ (३)	दादूजीकी कृत		१८वीं	१४६–१९५	
२६६	८५०१ (४)	दादूदयालजीको ग्रंथ		,,	१९५–२३३	अपूर्ण।
२६७	८४२८ (१७)	दादैजी महाराजरा तवन		२०वीं	१४२–१४५	
२६८	८४२८ (२)	दादैजीरो तवन		,,	१ ला	
२६९	८४ ० (२५)	दानगीत	जयतीदास	१९वीं	६५–६७	
२७०	८४४८ (५)	दानलीला		,,	२४–२८	लि क व्यास अमरकीर्ति।
२७१	९०२७	दान-शील-तप-भावना-सवाद	समयसुन्दर	१६९६	५	
२७२	८१८३ (१)	दानसीलरो चौढालियो	,,	१८वीं	१–७	
२७३	१००५२ (४)	, ,		१८९७	१०५–१२५	
२७४	९५०१	दीपमालिका कथा		१८वीं	११	
२७५	१०१८० (५६)	दूहा, पद आदि		१९वीं	१५८–१६२	
२७६	९२५२ (४)	दूहा-सोरठा किसनियारा		१८वीं	३ ४	*
२७७	९९४४	दृष्टान्तशतक		१९वीं	४०	प्रथम पत्र अप्राप्त।
२७८	१००१२	दृष्टान्तसंग्रह		२०वीं	१८	, ,,
२७९	९५३६	देवनामावली		१८वीं	७९	अपूर्ण।
२८०	८०४३	देववदन		२०वीं	१३	लि क दलसुक[ख]राम।
२८१	८४२९ (१८)	देववादशक्रस्तव		,,	६७–६८	
२८२	८१८३ (४)	देसन्तरीछन्द	समयसुन्दर	१८वीं	१९–२४	

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
२८३	८४५५	वेसन्तरीछन्द		१९वीं	४७	
२८४	८९४०	वोषावली		१९०३	६	लि क ऋषि दयाचद । लि स्था. खाचरोद ।
२८५	९४५९	,,		१९४८	४	लि. क ऋषि प्रेमचद । लि स्था कलकत्ता ।
२८६	८८४०	धनवत्तचउपई	समयसुन्दर	१७२४	१४	लि. क दीप्तिविजय, अमृत-गणिशिष्य ।
२८	१०१८० (२४)	धनाऋषिसज्झाय		१९वीं	६३वा	
२८८	१००५२(५)	,, ,,		१८९७	११५–११७	
२८९	१००५१ (११)	धनाकाकादिरी सज्झाय		१८८५	१३१–१३३	लि क लिषमीचद ऋषि । लि स्था मादपुरी ।
२९०	८८४१	धन्नारास	मतिसार	१८वीं	१५	र. का १७०२ ।
२९१	१०२४८ (१०)	धन्नारिषरी सज्झाय, सचित्र		१८१२	६६–६७	चित्र स १ ।
२९२	१००५१ (२)	धन्नाशालभद्रमहाचरित्रचौपई		१८८५	६५–१०७	लि क लक्ष्मीचद ऋषि ।
२९३	१०१८०(३)	धन्नाशालिभद्रमुनिवरस्वाध्याय		१९वीं	२३–२४	
२९४	९६४१	धन्नासालभद्रचउपई		१७३१	३२	पत्र स १, २ अप्राप्त ।
२९५	१०१८० (१४)	धमाल		१९वीं	४२वा	
२९६	७९८६	धर्मचर्चा		१८३०	१३	
२९७	९५१२	धर्मवत्तरी चौपाई		१८वीं	५९	प्रथम पत्र अप्राप्त । अपूर्ण ।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
२९८	८२६८	धर्मबुद्धिचौपाई	लालचद	१८०६	१७	
२९९	८३३८	धर्मसारधर्मबुद्धिचौपाई	लाभवर्द्धन, शातिहर्षगणिशिष्य	१८५९	२५	र का १७४२ ।
३००	८५००	ध्रुवचरित्र	जनगोपाल	१९०३	७४	
३०१	८५६१(४)	,,	,,		१२४–१३७	आदिके १४ पत्र अप्राप्त ।
३०२	८१२३	नदबहोत्तरी		२०वीं	६	र का १८७९ । र स्था कुचामण ।
३०३	९२५८	नखशिखवर्णन	बलिभद्र	१८६५	१७	लि क शोनारायण । लि स्था राजगढ सवाई बकतावरसिहजीराज्ये ।
३०४	९८३६(२)	नरसीजीका माहेरा		१९वी	५१	
३०५	८८३९	नलदवदन्तीचौपई	समयसुन्दर	१७०४	३४	लि स्था उदयपुर ।
३०६	१०१=० (४५)	नवकारछन्द		१९वीं	१३४–१३५	
३·७	१००५१(३)	नवकारमत्रतवन		१८८५	१०७–१०८	
३०८	१००५१(५)	,, ,,		,,	१११–११२	
३०९	७९१९	नवकाररास	तिलोकचद	१८९१	५७	लि क तिलोकचद । र स्था उज्जेन ।
३१०	७९४१	,,		१९वीं	७७	र का १८५७ ।
३११	७९७४	,,		१७वीं	४	
३१२	८४२८ (५)	,,		२०वी	६१–६४	
३१३	१०२४८(७)	नवकारस्तवन		१८१२	५६–५९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३१४	१००५२ (१२)	नवकारस्तवन		१८९७	१३४ वा	
३१५	९४६४	नवतत्त्व		१८वीं	५	
३१६	१००५२(२)	नवतत्त्वगाथाबालावबोध		१८९७	३४–९८	
३१७	९५१९	नवतत्त्वप्रकरण, बालावबोध		१८वीं	१२	लि क माणिक्यचद्र मुनि ।
३१८	८४०३ (१)	नवतत्त्वबालावबोध		२०वीं	१–२१	
३१९	९८३३	,, ,,		१८३९	४६	लि क गगाराम साहजी ।
३२०	८४२८(१५)	नवपद		२०वी	१३०–१४०	लि स्था. बोलीनगर ।
३२१	८४२९(१६)	नवपदआरती		,,	६१–६४	लि क हुकमचद।
३२२	८४०३(६)	नवपदकलशपूजाविधि		,,	८३–९४	
३२३	९८६३	नवपदपूजा		१९२४	१७३	लि क प सवाईसागर । लि स्था. देपालनगर मालवदेशे ।
३२४	१०२४९	,,		१९वीं	१५१	लि स्था गुढवचनगर ।
३२५	८१७०	नवबोलकी चर्चा	दीपविजय कवि	,,	१०	
३२६	८०५८	नवरत्नकलश		१८७४	९	
३२७	१०१८० (२०)	नवलनागरी		१९वीं	५९ वा	
३२८	१०२४८ (१३)	नाकोडापार्श्वनाथस्तवन		१८१२	७० वा	
३२९	८५१५	नागराजपिङ्गल		१९२३	२	लि क रामदास कबीरपथी ।*
३३०	१०१८० (५१)	नागलानी सिझाय		१९वी	१४५–१४७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३१	८४०६	नासिकेतकथा		१८९८	२२	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
३३२	९४२०(२)	,, ,, सचित्र			१३२–१६५	चित्र सं १८ ।
३३३	९८४७	। ऽ।		१८२४	९	लि क मालीदेवी ।
३३४	९८२९(१)	नीतिशतक सटबार्थ	भर्तृहरि	१७९९	१–२५	लि क रूपचंद ।
३३५	१०६७५(६)	नीसाणी आदि		१९वी	१२	
३३६	८५६२(१४)	नीसाणी भागरी		१७९५	१३६–१३९	
३३७	८४२२(३३)	नेमजीस्तवन	कल्याणसागर	१८वीं	१०५–१०६	
३३८	१००५१	नेमजीरो तवन		१८८५	१४०–१४२	
३३९	१००५१ (१८)	नेमजीरो बारामास्यो		,,	१४२–१४४	
३४०	८४२९(१५)	नेमिजिनगीत		२०वीं	५८–६१	
३४१	८४०० (२१)	नेमिनाथगीत		१९वीं	६२–६३	
३४२	८४००(२६)	,,	अजीतसागर	,,	६७–६९	
३४३	९६२२	नेमिनाथस्तव		१७७९	१०	लि. क भगवान चेला ।
३४४	१०१८० (५८)	नेमिनाथस्तवन		१९वीं	१७९	
३४५	१००४९	नेमिरास		,	११०	
३४६	८१३६	नेमीश्वरराजमतीरास		१८४३	९	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि स्था विक्रमपुर ।
३४७	९९४८	प्रकृतिनो विचार		१८४७	१२	
३४८	८८२५	प्रत्येकबुद्धचौपई	समयसुन्दर	१९००	२६	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि क विनयराज मुनि शिष्य सकलहर्ष पठनार्थं ।

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४९	९७१९	प्रतापसिंहरी वार्ता		१९वीं	७०	प्रथम दो पत्र अप्राप्त।
३५०	८३५२	प्रश्नोत्तरबोल		,,	१३	लि. क पुष्कर ऋषि। लि स्था बालोतरा।
३५१	८५६२(११)	प्रह्लादचरित्र	जनगोपाल	१७९५	९६–११५	लि क. गुलाबराय हरिदासोत।
३५२	९९५९	, ,	,,	१९वी	२४	अपूर्ण।
३५३	८०८९	प्रास्ताविकश्लोकसूत्रार्थ		१८वीं	१०	प्रथम पत्र अप्राप्त।
३५४	१०६७८	प्रास्ताविकसज्झाय		१९वी	५२	जीर्णप्रति, कतिपय पत्र त्रुटित।
३५५	८३५८	प्रियमलक चौपाई	समयसुन्दर	१८वी	७	र का १६७२। र स्था मेडता।
३५६	८५१०	प्रेमरत्नाकर	भैयारतनपालके लिये देवीदास कृत	१९२०	१७	लि क रामदास कबीरपंथी। *
३५७	१०१८० (६२)	पञ्चकल्याणक		१९वी	१९१–१९७	
३५८	१०१८० (३८)	पञ्चकारणगर्भित वीरजिनस्तवन		,,	९१–९४	
३५९	८४२२(७०)	पञ्चतीर्थीस्तवन	लावण्यसमय मुनि	१८वीं	८३–८४	
३६०	९७०७	पञ्चपरमेष्ठीनमस्कार		१७७१	८	लि क क्षमाधीर। लि स्था सूरतबन्दर।
३६१	८४२९(१९)	पञ्चरात्र स्तव		२०वीं	६८–६९	
३६२	८५६२(२)	पञ्चसहेलीरा दूहा	छीहल कवि	१७७५	३६–४४	र का १५७५। लि क गुलाबराय, हरिदासोत।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६३	८१३५	पञ्चसाधूनी चौपवी	कान्हजी [कीर्तिसुन्दर]	१७८६	१०	र का १७५६ । र स्था जैतारण । लि क धर्मसुन्दर ।
३६४	६५६७	पञ्चेन्द्रीकी चउपई		१८८४	२०	लि क. हर्षचद । लि स्था बरडावदा ।
३६५	८४२८ (१६)	पजूसणारी थुइ		२०वीं	१४०-१४२	
३६६	८०५५	पट्टीपहाडा		१९१४	१४	
३६७	८४२२(१९)	पद्मावतीसज्झाय		,,	८२-८३	
३६८	९०२२	पद्मिनीचरित्र	लब्धोदय	१८३०	३५	
३६९	८४०० (१७)	पद		१९वीं	५२-५६	
३७०	८४२६(२३)	,,		२०वीं	८९-९५	
३७१	९५२२(३)	,,		१७६८	२	
३७२	९५२२(८)	,,		१८वीं	५ वा	
३७३	१०१८० (४९)	,,		१९वीं	१४२-१४३	
३७४	९०५२ (५)	पदमणीचौपई	लब्धोदय गणि	,,	१-७	
३७५	८१८३ (६)	पद्मावती	समयसुन्दर	१८वीं	५७-६०	
३७६	८४२९(२६)	पदसग्रह		२०वीं	१०७-१०९	
३७७	९२५७ (१)	,,		१९वीं	५२	पत्र सख्या १-१० अप्राप्त ।
३७८	९२५९	,,		१८वीं	१-८१	अपूर्ण ।
३७९	९२८०	पन्वरमी विद्या, सचित्र		,,	६९	चित्र स ८५ ।
३८०	८७४८(१)	पनरमी विद्या भोजचरित्रकथा	भवानीदास व्यास	१८४९	१-२६	लि क ऋषभकीर्ति । लि स्था दौलतगढ़ ।

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८१	६७६०	परदेशीराजाकी चौपाई	जयमल	१७४७	२१	लि क नरोत्तमदास।
३८२	७६४३	परदेशीसंधि	जेमल ऋषि	१८५१	१४	लि क सूर्यसौभाग्य। लि स्था नारायणगढ़।
३८३	६१५२(४)	परदेशीराजारी चौपाई		१६०५	६०–६६	लि क रामधन।
३८४	१०१८० (६५)	परमारथहिंडोलिना		१६वी	२००–२०१	
३८५	१०४२४	पल्लीविचार		२०वी	४	
३८६	१०६७५	पत्र		१६वी	६	प्रथम पत्र अप्राप्त। अपूर्ण। पुरुषकी ओरसे स्त्रीके नाम।
३८७	१००५१ (४)	पाचतीर्थीतवन		१८८५	१०६-१११	
३८८	८२६७	पाडवचरितचौपाई	लाभवर्धन	१८५०	४२	लि स्था बीकानेर।
३८९	८८२३	पाबूरा दूहा		१६वी	५	
३९०	१००५२ (११)	पाश्वनाथजिनस्तवन		१८६७	१३३ वा	
३९१	१००५२ (१५)	पार्श्वजिनस्तवन		,,	१३८–१३६	
३९२	१०१८० (८३)	,, ,,		१६वी	८२–८४	
३९३	८४२६(२०)	पार्श्वजिनस्तुति		२०वी	७०–७१	
३९४	६२५५(१०)	पार्श्वनाथकथा		१८वीं	४२–४८	लि क विजयराम।
३९५	८४०० (११)	पार्श्वनाथगीत		१६वी	३८–४१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
३९६	८४०० (२८)	पार्श्वनाथ गीत	जिणचंद	१९वीं	७०–७१	
३९७	८४००(५)	पार्श्वनाथनीशाणी		,,	११–१९	
३९८	१०१८०(६)	पार्श्वनाथनो स्तवन		,,	२७ वा	
३९९	१०१८० (१२)	,, ,,		,,	४०–४१	
४००	१००५२ (२२)	पार्श्वनाथस्तवन		१८९७	१७०–१७९	
४०१	१०१८० (७)	पार्श्वनाथस्तुति		,,	२७ वा	
४०२	८४३१	पार्श्वनाथस्तोत्रादिसंग्रह		,,	२०	
४०३	१००५२ (१३)	पार्श्वप्रभुजीस्तवन		१८९७	१३५–१३६	
४०४	८४२१(१)	पारसनाथकथा		१९वी	१८–२०	
४०५	८४२२(२४)	पारसनाथस्तवन		१८वी	८७–८८	
४०६	८५६२(१३)	पीपाजीरी चितावणी		१७९५	१३२–१३५	
४०७	८९९४	पुण्डरीककण्डरीक रास	नारायण मुनि	१८वीं	४	
४०८	९८१०	पुण्यछत्तीसी	समयसुन्दर	,,	६	
४०९	१०१८० (२३)	पुद्गलपरावर्तनो विचार		१९वी	६२–६३	
४१०	९८९९(६)	पुरुषोत्तमस्तोत्र	गोरार्च	२०वीं	१२ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४११	८४०३(७)	पूजापद				
४१२	९२५१	पूरणमासीरी कथा		२०वीं	९४–९५	
४१३	१०१८९(१)	पृथ्वीराजपवाडा		१८वीं	४१	
४१४	७८७७	पृथ्वीराजरासो	चव कवि	१९वी	१–७०	
४१५	९२०२	,, ,,	कवि चन्द वरदाई	१८०६	१०८	लि क मोटाराम। जीर्ण प्रति।
४१६	९२३१	,, ,,	,, ,,	१८९१	११२	
४१७	९२६५	,, ,	,, ,,	१९०३	७०	
४१८	९३३४	,, ,,	,, ,,	१८५३	५५	
४१९	९३३५	,, ,,	, ,,	१८१२	४३	
४२०	८५६२(१५)	फुटकर दूहा		,,	६१३–६२९	लि क जयकृष्ण मिश्र।
४२१	९२५२(३)	फूलचितावणी		१७९५	१३९–१४३	दोहा स ६२।
४२२	१०६८०(१)	,, ,,		१८वीं	३	
४२३	१०४७६	फूलजी फूलमतीरी वात, सचित्र		१९वी	१–४	
४२४	९१२७(१)	फलजी फूलवतीरी वात		,,	५३	चित्र स ५३ प्रकीर्ण।
४२५	८४९८(३)	फलीबाईकी परची		,,	१–१४	लि क नाथू व्यास।
४२६	८४०२(४)	बडी नीतिना माडला		१८वी	१६–२४	*
४२७	८८३१	बडी ब्रह्मचरी	समरसिंघ	२०वी	५६ वा	
४२८	८४२२(९)	बडी नवकार		१७वी	५	*
४२९	८४२८(१)	बत्तीसदोषसामायक		१८वी	४२–५०	
४३०	१००५२(७)	ब[ख]न्धक कुमारनो चौढालियो		२०वी	२	
४३१	८४२२(२५)	बम्भणवाडस्तवन		१८९७	१२३–१३०	
			कमलकलशसूरि	१८वी	८८–८९	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
४३२	६११७(१)	बल्लभाख्यान		२०वीं	१—२२	
४३३	८५६०(४)	बारहमासी		१८८०	६२—६६	लि क मुरतराम चारण
४३४	६२५७	बारहभावना		१८वी	४—५	
४३५	१०२४८(२)	,, ,,		१६वीं	३६—४०	
४३६	१०१६०	बीकाजीरा तमाशा		,,	१२३	*
४३७	६८६१(१६)	बीजुमन्त्र		२०वीं	८२ वा	
४३८	८५६२(७)	बेदलाका गीत			७५ वा	पत्रके दूसरी ओर केशो पचोली-का कवित्त है।
४३९	६०५२(६)	भवरगीतरा दोहरा		१६वी	१—६	पत्र चिपके हुए और फटे हुए हैं।
४४०	१००५१ (१६)	भवरारी सज्झाय		१८८५	१३६—१४०	*
४४१	८८६८(१)	भक्तविरदावली		१८वी	१—४	प्रथम पत्र अप्राप्त *
४४२	८५६१(३)	भगतिभावती ग्रथ	अनन्तानद		१०५—१२३	र का १६०६। लि क रूपदास। गरीबदास शिष्य।*
४४३	१०१८६(२)	भटवाडी		१६वीं	७१—७२	
४४४	८८१८	भड्डलीग्रथ		,,	८	
४४५	८५०५(४)	भड्डलीगर्भ		१६२७	१—१०	लि. क. रामदास कबीरपथी।
४४६	८६६५	भडलीवाक्य	भड्डुक वि	१८३०	६	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
३४७	८०४७ (२)	भडलीवायकसमयविचार	भड्डली	१८९५	२७–३३	अपूर्ण।
४४८	१०१८० (३७)	भमरगीता		१९वीं	८८–८९	*
४४९	८४९८ (५)	भरथरीउपदेश		१८वी	२७–३०	
४५०	८५०१ (१)	भरथरीगोरखनाथसवाद		,,	१–८८	
४५१	१०६७५ (४)	भवानीका स्तोत्र		१८२३	८३–८४	
४५२	८५०३	भागवतभाषानुवाद		१८वी	६–२४७	ग्यारवें स्कधके ९वें अध्याय तक प्रति जीर्ण। अपूर्ण।
४५३	१०६८० (४)	भावकुभावचितावणी		१९वी	२३–२९	
४५४	९५२१	भावनाविचार		१८वी	३	
४५५	८५६२ (१)	भोगलपुराण		१७९४	१–३६	लि क अखैराम।
४५६	८५०५ (१)	भौगुलप्रमाण		१९२३	१–१९	लि क रामदास कबीरपथी।
४५७	९५२२ (७)	भौंदूज्ञानदूगपद		१७६६	५	लि क ऋषि हेमराज। लि स्था पट्टनानगर।
४५८	९०२९	मगलकलशफाग	कनकसोम	१८वी	८	
४५९	१००५२ (१९)	मगलीक		१८९७	१५२–१५३	
४६०	१०१८० (५३)	मडूकाध्ययन		१९वी	१४९–१५०	
४६१	१०१८० (६९)	,,		,,	२२०–२२२	
४६२	८४२२ (२६)	मगसी पारसनाथस्तवन		१८वी	८९–९१	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४६३	८४२२ (३४)	मगसी पारसनाथस्तवन		१८वीं	१०६–१०८	लि क अमरसागर।
४६४	८९९९	मच्छोदर चौपई	जिनहष	१७०२	१०	पत्र स २ अप्राप्त। र स्था बाडमेर।
४६५	७९४२	मणिपतिचरित्र		१९वीं	३५	अपूर्ण।
४६६	८८२२	मदनशतक		१८वीं	६	लि क प ईसर।
४६७	१०२५८	मधुमालती सचित्र			६३	चि स. ५४।
४६८	१०४७७	मधुमालतीकी बात, सचित्र			९	चित्र स १०, प्रकीर्ण।
४६९	९०९२(४)	मधुमालती चौपई	चतुर्भुजदास	१८०२	१–७४	लि स्था जावद।
४७०	८४२२ (७) ए	मनगुणतीसी	गुणसागर	१८वीं	९१–९२	
४७१	७९३४	मयणरेहा	मतिशेखर	„	२१	र का १५३७।*
४७२	९४६८	महावीरचरित्र, बालावबोध		१६वीं	१७	
४७३	८४२८(१०)	महावीरजीरो पारणो		२०वीं	१०९–११४	
४७४	१००५२ (२०)	महावीरजीरो स्तवन		१८९७	१५३–१५४	
४७५	८४००	महावीरपारणस्तवन	देवीचद	१८६४	९०–९१	लि क अखेराज पुत्र चिरजी, पौत्र भोजराज।
४७६	१००५० (१५)	महावीरपारणसिज्झाय		१९वीं	४२–४५	
४७७	८४२२ (१२)	महावीरस्तवन		१८वीं	५७–६३	
४७८	१०२४८ (१८)	„ „		१८१३	१२०–१३४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४७९	८४०२(१)	महावीरस्तवन सार्थ		१९१९	१–४२	प्रथम पत्र अप्राप्त । र का स १७३३ । र स्था ईदलपुर । टीकाकार-नयविजय ।
४८०	८४००(३३)	महावीरस्वामीजीरा पारणा	पाशचद	१९वी	७५–७८	
४८१	८७९५	माधवानलकामकदला		१७वीं	१४	
४८२	९०५२ (३)	,, ,, चौपई	कुशललाभ	१८०२	१–४१	र का स १६१६ । लि स्था जावद ।
४८३	१०४७९	,, ,, सचित्र			३५	चित्र स ३७ ।
४८४	१०६६० (२)	,, ,, ,,		१८०७	६३–१०१	,, ,,
४८५	९४९५	मानतुग मानवतीकथा		१८७१	६	लि क हमतरम (हिम्मतराम?)
४८६	७८८३	मानतुग मानवतीचरित्र	मोहनविजय	१८१४	२३	लि क चद्रसौभाग्य । लि स्था लघु सादडी ।
४८७	८८०७	मानतुगमानवतीचौपई	अभयसोम	१८वीं	१०	र का १७२७ ।
४८८	८१०९	मानतुगमानवतीरास	अनोपसिह	१९१५	७	लि क रुषमणी । लि स्था उदरामसर ।
४८९	८३४९	,, ,,	रूपविजय, मानविजयशिष्य	१८०३	४०	लि क. धर्मसुन्दर, रुक्कसूरि शिष्य ।
४९०	१०१८९(५)	मामा नरसीका माहेरा		१८५०	११४–१४६	
४९१	९७२१(१)	मालदेवजीरो सगुण	राव मालदेवजी	१९वी	१–४२	
४९२	१०१८० (१०)	मासवारनी पूनिमनो विचार		,,	३०, ३१	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९३	१०६८० (५)	मुरखावली		१९वी	३०, ३१	
४९४	१०२४८ (१६)	मृगापुत्ररिषिसंधि		१८१३	११५–१२६	
४९५	८१२१	मृगालोढ़ानो चरित		१८२९	४	लि क फत्ता। लि. स्था किशनगढ।
४९६	७९६६	मृगावतीचौपाई	समयसुन्दर	१७वीं	२२	र का १६६४। जीर्ण प्रति।
४९७	८८२७	मृगावतीरास	,,	,,	५०	
४९८	७९०९	मेघकुमारचौपाई	गेलराजशिष्य	१८वी	५१	अपूर्ण।
४९९	१००५१ (१०)	मेणरेहारी चौपई		१८८५	११६–१३१	
५००	१००५४	मेतारिषरी सिज्झाय		१९वी	९८	प्रथम ६ पत्र अप्राप्त।
५०१	८२८०	मेलक[प्रियमेलक]चौपई	समयसुन्दर	१७वी	११	र का. १६७२। र स्था मेडता।
५०२	८५६२ (४)	मोकमसिंहजी सगतावरो गीत	भीमजी आढा		७१ वा	*
५०३	९०६२(१)	मोरध्वज अष्टपदी		१९६१	१–७	लि क. मोहनकीर्ति।
५०४	९८६१ (१३)	मौनएकादशीस्तवन		२०वी	४४–४८	
५०५	८०३७	मौनीएकादशीकथाचौपई	आलमचद	१८३४	११	लि क भगवान।
५०६	१०२४८ (१९)	युगधरजी गीत		१८१३	१३४–१३६	
५०७	८२८९	योगसारमांहिली वार्ता		१८वीं	५	
५०८	९०००	रत्नपालचरित्ररास	मोहनविजय]	,,	३९	

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
५०९	८१०१	रतनचूडचउपई	जिनरतनसूरि	१८वीं	२१	र का १७२८।
५१०	८२९७	रतनचून्न मणिचून्नचरित्र		१८७१	६१	लि क बदीचद। लि. स्था बयामपुर।
५११	८२३३	रतनपालऋषिचरित्र	मोहनविजय	१८९७	७५	लि क मोहनविजय। प्रथम पत्र अप्राप्त।
५१२	८२३२	रतनपालमुनिचौपई	रूपवल्लभ, रघुपतिगणिशिष्य	१८२०	१५	लि क माणिक्यराज, कर्ताका गुरुभाई। लि स्था बीकासर।
५१३	१०६७५(५)	रतनमहेसदासोत रागडरी वचनिका		१९वी	८५–९०	
५१४	८७४८(३)	रतनाहमीररी बात		१८८५	१–१९	
५१५	९१२७	,, ,,		१९वी	१५–३४	लि क नाथू व्यास। लि स्था जोधपुर।
५१६	८६४१	रसरतनागर	सैदपहार, सैदहमजासुत	१८४०	९५	पत्र स ३१ से ४५ अप्राप्त।*
५१७	८५६०(२)	रसालुकवररी बात		,,	२०–५३	
५१८	८५६०(३)	रसालुकुवरकी बात		१८८०	५५–६५	
५१९	८८४८	रसिकप्रियाराजस्थानीटीका	केशवदास	१७५४	१–६	लि क मुनि प्रेमसुन्दर।
५२०	१०२४८ (१४)	राग, ढाल आदि		१८१३	७१–११२	
५२१	९७२२	रागपद		१९वीं	१–४०	
५२२	९२८९	रागसकेत		१८वी	८	
५२३	८८५५	राजनीतिशास्त्र (हितोपदेश)	नारायण	१९००	१३७	लि क गणि मोहनविजय। लि स्था राधोगढ़, अजितसिंह राज्ये।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
५२४	६४५०	राजप्रश्नीयसूत्र सटबार्थ		१७६६	१७४	
५२५	६५२२(४)	राजमतीगीत		१८वीं	३	
५२६	६४८०	राजाभोजरास	कुशलधीर	१७२९	५०	र का १७२९ । र स्था सोझत ।*
५२७	६१९३	राजा रिसालूरी बात		१८वी	१६	लि. क मानसिह । लि स्था कुचेरा ।
५२८	८५०६	राजियाका सोरठा	कृपाराम बारहट	१९८८	३२	लि क सबलसिह शेखावत । लि स्था पलथाणा ।
५२९	१०१८० (११)	राजुलसझाय		१९वी	३१-३२	
५३०	८४००(२०)	राणपुरागीत	समयसुन्दर	,,	६०-६१	र का १६७२ ।
५३१	८४२२(३७)	राणपुरारो स्तवन		१८वी	११४ वा	
५३२	१००५१ (२२)	राणी कमलावतीरी सिज्झाय		१८५५	१५०-१५३	लि क लिषमीचद ऋषि । लि स्था माधूपुरी ।
५३३	६१२८	राधाबल्लभका ख्याल		१९वी	७४	*
५३४	८४९८(२)	रानाबाईकी परची		१८वीं	५-१६	
५३५	७८९८	रामकृष्णचरित्र	लावण्यकीर्ति	१७१९	३८	लि क इन्द्रविजय । लि स्था शुद्धदतीपुर ।
५३६	६२८१	रामचरित्र, सचित्र		१८वीं	२४१	चित्र स. ६३४ ।
५३७	७९००	रामचरित्र	केशराज	१८५१	६८	लि क सूर सौभाग्य । लि स्था नारायणगढ़, मलागढ़ पार्श्वे ।

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
५३८	८३२९	रामचरित्र (रामयश रसायन)	केशराज	१८७५	११७	लि क मोहता आरज्याजी वक्ता सिहरग।
५३९	९२९२	रामचरित्रको कक्को		१८वी	३	
५४०	९१२६	रामजस	,,	१६८७	१५४	र का १६८३।
५४१	९२८८	रामरस बोध		१८वी	६२	
५४२	८५५९ (४)	रामरक्षा स्तोत्र	रामानन्द	१८५५	१८९–१९९	
५४३	८८२१	रामरासो	माधोदास	१८४०	२८	
५४४	७९०२	रामविनोद	रामचन्द्र, पद्मरगशिष्य	१८वं	८४	अपूर्ण।
५४५	८२४३ (१)	,,		,,	१३८	
५४६	८३५३	,,	,, ,,	१९वी	१०७	
५४७	८४५१	,,		१८वी	६१	,,
५४८	८५२८	,,	रामकवि	१९वी	१५७	पत्र स ७७–८३, ८५–११३ और ११५, १२७ तथा १३२ अप्राप्त।
५४९	९९३९	,,		१८वी	११३	प्रथम ३ पत्र अप्राप्त।
५५०	१०२४०	,, भाषा		१८७३	९६	
५५१	८९९६	रामसीता चौपई	समयसुन्दर	१८३५	८४	
५५२	८४९०	रामायण कक्का	टोडरमल	२०वी	२०	
५५३	७८७४	रावत प्रतापसिंह म्होकमसिंह हरिसिंहोतरी वात	बहादुरसिंह, महाराज, किशनगढ	१८९५	२७	लि स्था जयपर।
५५४	१००५१(६)	रिषभदेवजीरो तवन		१८८५	११२ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
५५५	१००५१ (८)	रिषभदेवजीरो तवन		१८८५	११३–११४	
५५६	८८०१ (१)	रूपचन्द्र चौपाई	वनयकुवर	१८वीं	५४	र का १६३७। र. स्था विजयपुर। प्रथम पत्र अप्राप्त।
५५७	९०८९	रूपदीप पिंगल	जयकृष्णपुष्करणा, भवानी-दाससुत	१९५०	१५	
५५८	८१९१	रूपदीप भाषा	जयकृष्ण	१९२६	६	लि क रामदास कबीरपथी। र का १७७२।*
५५९	८२६०	रूपसेन रास	महानव	१८५०	८९	लि क वधीचद।
५६०	९०६२ (२)	लावणीसग्रह		१९६१	८–४७	लि क मोहनकीर्ति।
५६१	१००५६	लीलारास		१९वीं	९८	
५६२	८१७१	लीलावती चउपई	लाभवर्धन	१७४५	४८	र का १७२८। प्रथम पत्र अप्राप्त। कीटविद्ध प्रति।
५६३	७९६३	लीलावती भाषा	मू. भास्कराचार्य	१९वीं	३४	लि स्था बीकानेर। अनूपसिंह राज्ये।
५६४	८५१४	,, ,,	टीका लालचद	१९२२	२१	
५६५	९००४	,, ,,	,, ,,	१७८२	२३	लि क. कानकुशल।
५६६	८४९५	लीलावती भाषानुवाव	अमीचद	१८९९	१०५	
५६७	८४९६	,, ,,	,,	१९२५	८८	
५६८	८३२१	लीलावती भासा	लालचद	१७७४	१७	
५६९	८५०५ (२)	वशावली उत्पत्ति, भागवतान्तर्गत		१९२३	१–७	लि क रामदास कबीरपथी।
५७०	८४२२ (३६)	वरकाणा पारसनाथतवन		१८वीं	११३ वा	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७१	१००५२ (१४)	वर तपस्तवन		१८६१	१३६–१३७	
५७२	८६४१	वस्तुपाल तेजपालरास	समयसुन्दर	१६वीं	२	
५७३	६८२६	वास्तुशास्त्र		१६५३	७	स्फुट पत्र। लि क आशुलाल पोकरणा। लि स्था नवानगर।
५७४	८०८८	विंशति पदपूजा	जिनहर्ष सूरि	१८७५	१४	लि क हुसराज मुनि।
५७५	८४२५	विक्रमकथा		१८वीं	२४–१३७	प्रारम्भके २३ पत्र अप्राप्त।
५७६	७६४०	विक्रमचरित (पचदंड चौपई)		१७६२	२६	लि क तिलकसुन्दर।
५७७	८६८०	विक्रम चौबोली	अभयसोम	१८४५	१७	लि स्था जोजावर।
५७८	८१८३ (८)	विक्रमरास	लाभवर्धन	१८वीं	६५–८०	
५७९	८८०८	विक्रमसेन लीलावती चौपई	मानसागर	१८०१	४२	
५८०	७६२३	विक्रमादित्यसुत विक्रमसेन चौपाई	मानसागर, जीतसागरशिष्य	१८१४	२८	लि क चद्रसौभाग्य। लि स्था चीताखेडा नगर।
५८१	६४७३	विचार ग्रंथ		१७१७	२२	लि क ऋषि कान्हजी धनराज मुनिशिष्य। लि स्था बुरहानपुर।
५८२	६१६७	विचार गाथार्थ		१८१६	७	लि क प कृष्णविमलगणि। लि स्था बीझेवा नगरे।
५८३	६४५८	विचाररत्नसार बालबोध		१६१६	१०२	लि क व्यास गोरमल। लि स्था नागपुर।
५८४	७६७६	विचारस्तव बालावबोध		१७४२	६	लि क कुशललाभ।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८५	६७००	विचारस्तवबालावबोध		१६१४	७	
५८६	८१५०	विद्याविलास		१९वीं	४०	प्रथम और २६वा पत्र अप्राप्त ।
५८७	१००२५	विनति पत्रिका, सचित्र				खरडा ।
५८८	८४२२(३५)	विमलसाहरो सिलोको	विनय[विनीत]विमल (गभीरसागर शिष्य)	१७७२	१०८–११३	लि क. अमरसागर ।
५८९	९४६१	विमलाचलतीर्थ आरती		१९३१	६	लि क व्यास मगूमल। लि स्था बीकानेर ।
५९०	९०५२(७)	विवेकविलास		१८३१	१–२१	
५९१	८६५५	विवेकविलास सबालावबोध	जिनदत्त सूरि	१८४९	६२	लि क हेमसागर मुनि। लि स्था कच्छब्रदर।
५९२	१०२४८(८)	विषयत्याग गीत		१८१२	५९–६४	
५९३	९६७४	विषहरण		१८वीं	५	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
५९४	९२५७(२)	विषापहारस्तोत्र भाषा		,,	१–४	
५९५	८५६९	विज्ञप्ति पत्र, सचित्र		१९वीं		खरडा लेख भाग १४॥ फीट, चित्र भाग ६॥ फीट। सोजत जैन सघ द्वारा पाटनस्थ विजय जिनेन्द्रसूरिके प्रति ।
५९६	८५७०	,, ,,		१८६१		खरडा। लेख भाग १०। फीट, चित्र भाग २१ फीट। मेडता जैनसघ द्वारा राधनपुरस्थ विजयजिनेन्द्रसूरिके प्रति ।
५९७	८१५७	वीरनिर्वाणस्तवन	देवचद	१८वीं	५	
५९८	९७२०(११)	वीरमदेरी बात		१ वीं	९१–१४२	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
५९९	१०६४९	वेतालपचीसी		१८००	४८	लि क देवनाथ प्रश्नोरा। लि स्था सवाई जयनगर।
६००	९२९६ (३)	वेलीकृष्णरुक्मणी[री]		११२७	३९–७०	लि क नद्रूराम।
६०१	९१५२ (६)	वैद्य मनोत्सव		१९०५	७० वा	
६०२	७९३०	वैदमनोद्भव	नयनसुख (केसवदाससुत)	१८११	१०	र का १६४९। र स्था. सिंहनद नगरे। अकबरसाहि राज्ये। लि क सुजाण ऋषि। लि स्था लोटोती ग्राम।
६०३	८१२२	वैदरभी चौपई	पेमराज	१८वीं	६	लि स्था बीकानेर।
६०४	१००५० (१६)	श्रावकनी करणी		१९वीं	४५–४७	
६०५	१००५३	श्रावकनी करणी, आदि सिझाय सग्रहँ		,,	९४	
६०६	१००५२ (२१)	श्रावकनो पडिकमणो		१८९७	१६४–१६९	
६०७	८४००(१४)	श्रावकरी करणी		१९वी	४२–४५	
६०८	८४२८(१८)	,, ,,		२०वी	१४५–१५३	
६०९	१०२४८(६)	,, ,,		१८१२	५४–५६	
६१०	१००५१(९)	श्रावकरी सज्झाय		१८८५	११४–११६	
६११	१००५२(१)	श्रावकस्तवन सारिणी		१-९७	१–३३	
६१२	८४००(४)	श्रीअष्टक		१९वीं	१०–११	
६१३	९८५०	श्रीपाल चरित्र भाषा			७०	प्रथम पत्र अप्राप्त। अपूर्ण।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६१४	८२३१	श्रीपालप्रबन्ध चतुष्पदी	लालचंद	१९२७	६२	र का १८३७। लि स्था अजीमगज।
६१५	१०४७५	श्रीपाल महाराज चरित्र		१८३५	१११	अपूर्ण, स्फुट और त्रुटित पत्र।
६१६	७९२५	श्रीपाल रास		१८२७	४३	र का १७३८।
६१७	७९४६	,, ,,		१९वीं	९०	
६१८	८३४२	,, ,,	नयविजय	१८७२	५३	र का १७३०
६१९	८८३२	,, ,,	जिनहर्ष	१७८०	१०	
६२०	८९८६	,, ,,	विनयविजय यशोविजय	१९वीं	५७	
६२१	९४४८	,, ,,	महोपाध्याय विनयविजयगणि	१८वीं	७४	लि क चतुरसागरगणि।
६२२	९४५३	,, ,,		१७५७	२४	
६२३	८४०० (१६)	श्रीस्तवन		१९वीं	५२–५३	
६२४	८४२२(१६)	,,	गुणसागर	१८वीं	७७–७९	
६२५	९८६१ (६)	,,		२०वीं	२७–३०	
६२६	१००५२ (१०)	,,		१८९७	१३२–१३३	
६२७	८४३०(१४)	शकुनरा दोहा		१८१३	१०२–११५	
६२८	९२९५	शकुनावली आदि		१८०७	१०९	
६२९	८५५८(३)	शनिश्चरदेवजीरो स्तोत्र	कर्पूरविजय	१८४३	१–८	
६३०	१००५० (१०)	शनिसरदेवकी कथा		१९वीं	१–१३	
६३१	८४०१	शनैश्चर कथा		१९२७	४६	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६३२	१००५०(५)	शत्रुञ्जयगिरिवररास		१९वीं	१६–२६	
६३३	८४२८ (११)	शत्रुञ्जयगिरिवरस्तवन		२०वीं	११४–११६	
६३४	८३१९	शत्रुञ्जय रास	समयसुन्दर	१८वीं	१३	लि क गगाराम।
६३५	८४२२(१३)	,, ,	,,	,,	६३–६८	र का १६८२।
६३६	९४६७	शत्रुञ्जयस्तव		१९२२	६	लि क कल्याणनिधान मुनि।
६३७	८४२२(२७)	शत्रुञ्जयस्तवन	विमलहर्ष	१८वीं	९३–९४	
६३८	१०१८० (३६)	,, ,,		१९वीं	८७ वा	
६३९	७८७५	शत्रुभेद	मुहणोत जोगीदास	१८६२	२–२४	*
६४०	९५२२(२)	शान्ति जिनस्तवन		१७८७	१	
६४१	१०१८० (३०)	,, ,,		१९वीं	७४–७५	
६४२	८४००(२३)	शान्तिनाथ गीत	पाशचद	,,	६३–६५	
६४३	८४२२(२१)	शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर, पद्मसागरशिष्य	१८वीं	८४–८५	
६४४	९५२४(२)	,, ,,		,,	४–५	
६४५	९६५९	शालिभद्र चरित्र	जिनराजसूरि	,,	१७	र का १६७८। प्रथम पत्र अप्राप्त। लि स्था महाजननगर।
६४६	८२५६	शालिभद्र चौपई		,,	१८	
६४७	९१५२ (२)	,, ,,		१९००	४८–५५	
६४८	८४२२(४१)	,, ,,		१८वीं	१२५–१५३	लि क गाग ऋषि
६४९	८९०८(३)	,, ,,	,,	१८९८	४४–६९	लि क जति रूपचद पूनम गच्छे। लि स्था रतलाम।

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६५०	९१०१	शालिभद्र चौपई		१९२८	३३	र का १६७८। लि क प्यारचव महात्मा
६५१	१०१८० (४७)	शालिभद्र धनाभा[रा]स		१९वीं	१३८–१३९	
६५२	८९९५	शालिभद्र रास	जिनराज सूरि	१७वी	२१	पत्र संख्या ९–१३ अप्राप्त। लि क. थिरराज।
६५३	१०१८०(४)	शालिभद्र स्वाध्याय		१९वीं	२४ वा	
६५४	८४२२, २८)	शालिभद्र सज्झाय	सहजसुन्दर	१८वीं	६४–६५	
६५५	८३४३	शालिहोत्र	मू नकुल	१७९४	१२	लि क तुलसीदास वैष्णव। लि स्था बेधव।
६५६	९७२४	,,	,,	१८२६	१–५२	लि. क बखतराम।
६५७	९३३६	शालिहोत्र टीका		१८९२	३९	
६५८	८५६६	शालिहोत्र, सचित्र		१९वीं	९८	चित्र संख्या ४९। जीर्ण और त्रुटित प्रति।
६५९	१०१८० (५०)	शीतलनाथनु तवन		,,	१४३–१४४	
६६०	१०१८० (१६)	शीतलनाथस्तवन		,,	४५–४६	
६६१	१०१८० (१५)	शीयलसज्झाय		,,	४३–४५	
६६२	९८५४	शीलप्रबन्ध कथा		१८४५	१३	

क्रमाक	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६३	८३२२	शील रास	विजयदेव सूरि	१७वीं	४	
६६४	८७२१	,,	,, ,,	१८वीं	५	लि क. मुमुक्षु स्वज्या।
६६५	७९३२	शीलवती कथा		१६८७	६	लि क गगादास जोशी। एक ओर लिखित पत्र है।
६६६	१०१८० (६१)	शीलसज्झाय		१९वीं	१८९-१९१	
६६७	८२१४	शुकबहोत्तरी		,,	३०	
६६८	८१०५	शुद्धमति जिनस्तवन	देवचद्र (?)	१९३०	६	
६६९	१०१८० (४३)	शेत्रुजा उद्धार		१९वीं	१२६-१३२	
६७०	८४२९ (२८)	स्तवन सज्झाय सग्रह		१९३१	१११-२१७	पत्र स १६४, १६५ अप्राप्त। लि क हुकमीचद। लि स्था मदसौर।
६७१	८ ९५	स्तवनावली		१७२९	१६	र स्था. जैसलमेर।
६७२	८४२९ (१)	स्तुति पद सग्रह		१९५९	१-१९	लि क हुकमीचद।
६७३	८४२८ (३)	स्नात्रपूजा		२०वीं	१-१८	
६७४	१०६७५ (२)	स्फुट दोहा कवित्त		१९वीं	६	
७७५	८४३० (१५)	स्फुट पद सग्रह		१८१३	११६, ३१७	
६७६	९७३३	स्फुट राग पदावली		१९वीं	५६	
६७७	९५००	स्वामी [जबू स्वामी] चरित्र		१८०५	१४	लि क भोजराज। लि स्था बीकानेर। र का १५८३। र स्था अहिपत्तन।

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
६७८	८४०० (३०)	सखेसर जिनस्तुतिपद	जिनहर्ष	१९वीं	७२–७३	
६७९	८४०० (२९)	सखेसर पार्श्वनाथस्तवन	जिणचद	,,	७१–७२	
६८०	९२८२	सतदासजीकी वाणी	सतदासजी आदि	१८वीं	३६८	
६८१	९७९६	सतरद्वार		१७९५	३३	
६८२	९८६०	सवत्सर फल		२०वीं	१४	
६८३	१००५० (१७)	सज्झाय स्त्री पुरुषकी		१८७८	५८–६०	लि क गुलाबचद । लि स्था सागर ।
६८४	९७६४	सज्झायसग्रह	रत्नसागर	१९१९	१५	
६८५	९६२६	सतरा प्रकारकी पूजा		१९वी	९	अपूर्ण ।
६८६	८९९२	सत सवत्सरफल		,,	२०	
६८७	८४०० (८)	सद्गुरुवर्णनभाषा	मेघराज मुनि	,,	३६–३७	
६८८	८५६५	सदैवच्छ सावलिगारी वात, सचित्र		१८१६	३६	चित्र स २६ । लि क जितेन्द्रसागर ।
६८९	९८६१ (१५)	सनात्रपूजा		२०वीं	७५–८१	अपूर्ण ।
६९०	८४०३ (४)	सनात्रपूजा विधि	देवचद	,,	६८–७६	
६९१	१००५९ (४)	सप्ततिशत जिनस्तोत्र		१७वीं	४१वा	
६९२	९६५३	सम्यकतत्वकौमुदि	जोधराज गोदीका	१८वीं	६०	
६९३	९७१२	सम्यक्त्वकौमुदि	रतन चरित्र	१९०६	५०	
६९४	७९०४	समयसार नाटक टीका		१९वीं	१२९	,,
६९५	९६०५	समेतशिखरगिरिपूजा		१९३१	६	लि क मगूमल व्यास । लि-स्था विक्रमपुर ।

क्रमाक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
६९६	८२८३	समेतशिखररास टीका	सौभाग्यसुन्दर	१९१८	७	र. का १९०७।
६९७	८४२९(२)	समेतशिखर रासो		२०वीं	१९–३७	
६९८	८४००(४२)	समेतशिखरस्तवन	देवीचन्द	१९वी	८९–९०	
६९९	८४२२ (५)	सरसतीजीको छद	मनरग	,,	२४–२७	
७००	१०१८० (२२)	सवै कतीसा		,,	६१ वा	
७०१	९६७५	सवैया जैनमतका		१८वीं	६	
७०२	८१७२	सत्रहभेदी पूजा		,,	८	
७०३	८१८३(२)	सत्रुञ्जयरो रास	समयसुन्दर	,,	७–१५	
७०४	८५५६	साचा साहिबकी वीनती		१८५७	३०	लि क सोजीराम।
७०५	८४२२(३८)	सातनाथतवन		१८वीं	११५	
७०६	१००५१ (१४)	सातनाथजीरो तवन		१८८५	१३६–१३७	
७०७	१००५१	,, ,,		,,	१४४–१४५	
७०८	८८३६	,, ,,	,,	१७वी	१७	पत्र सं २ से ५ अप्राप्त।
७०९	८८२९	साबप्रद्युम्न चौपई	,,	१७०१	१७	लि स्था नीमली।
७१०	७९२८	सागरदत्त चौपाई	गुरु झाझण शिष्य (?)	१८वी	१७	र का १७४४। र स्था मेदपाट। लि क दर्शनसागर। लि स्था जालौर।
७११	१०२४८(५)	सातंव्यसनसिज्झाय		१८१२	४९–५४	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७१२	८३१८	साधना गुणसग्रह	क्षुल्लककुवर	१७वीं	३	
७१३	८४२६(६)	साधुचैत्यवदन		२०वीं	४८–५०	
७१४	१००५० (११)	साधुवदणा		१८७५	१३–१६	लि क नेमिचन्द। लि स्था बीकानेर।
७१५	८४००(७)	साधुवदना	पाशचन्द	१६वीं	२१–३५	
७१६	१००५२ (१८)	,,		१८६७	१४२–१५२	लि क लक्ष्मीचन्द। लि स्था अवतिका।
७१७	१०२४८ (१)	,,		१८१२	५–३५	लि क प जसवत चि अमरा सहित। लि स्था बाडमेर। प्रथम ४ पत्र अप्राप्त।
७१८	६८१३	सारस्वतविसर्ग सधि		१६५७	१४	लि क प केशरीसागर। लि, स्था. फलवर्द्धि नगर (फलोधी ?)
७१६	८१८३(५)	सालिभद्र महामुनि चउपई	जिनराज सूरि	१८५४	२४–५७	लि क. नूसुदर। लि स्था राजलदेसर, सूरतसिह राज्ये।
७२०	८१८३ (७)	सिहलसिह[सुत] चौपई	समयसुन्दर	१८वीं	६०–६४	
७२१	७६६१	सिहलसुत चौपाई	,,	,,	१०	र का १६७२। र स्था मेडता। लि स्था. झूठाग्राम।
	८८३३	सिहलसुत रास		१७वी	,,	लि स्था विक्रमनगर।

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७२३	८२१०	सिंहासनबत्तीसी		१९वीं	४२	प्रथम पत्र अप्राप्त ।
७२४	८०३२	सिंहासनबत्तीसी, सबालावबोध	हर्षसागर शिष्य (?)	१८वीं	२८	एकादश कथा पर्यन्त ।
७२५	८४२९(५)	सिद्धचक्रजीको तवन		२०वीं	४३–४४	
७२६	८४२९(६)	सिद्धचैत्यवदन		,,	४४–४५	
७२७	८४२८(१२)	सिद्धाचलगिरिस्तवन		,,	१२६–१२८	
७२८	८४००(१८)	सिद्धाचलस्तवन		१९वी	५६–५८	
७२९	८१५६	सिद्धिचक्र आराधन विधि		,,	६	
७३०	७९१८	सिन्दूरप्रकरण	सोमप्रभ	१८०२	१२०	लि क ऋषभदास । लि स्था सपाददेश ।
७३१	१००५१ (२०)	सीतारी सिज्झाय		१८८५	१४५–१४६	
७३२	१०१८० (१९)	सीमन्धर जिनस्तुति		१९वी	४८–५६	लि स्था. आसभीया ।
७३३	१००५२(९)	सीमन्धरजीस्तवन		१८९७	१३२ वा	
७३४	१००५२ (१७)	,, ,,		,,	१४१–१४२	
७३५	८४२८(१३)	सीमन्धरस्तवन		२०वी	१२८–१२९	
७३६	९५२२(६)	लीमन्धरस्वामीजीसु चैत्यवदन		१८वीं	४	लि क हेमराज ।
७३७	८४२२ (१५)	सीमन्धरस्वामी विनती	देवराज मुनि	,,	७२–७७	
७३८	८४०२(२)	सीमन्धरस्वामीस्तवन	नयविजय	२०वीं	४२–५३	
७३९	१०१८० (१८)	,, ,,		१९वीं	४७–४८	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसख्या	विशेष उल्लेखनीय
७४०	८४२२(२२)	सीमन्धरस्वामीस्तवन	भक्तिलाभ	१८वी	८५–८६	
७४१	८५६२(३)	सुखसमाधि	खेमदास स्वामी		४५–६६	पत्र सख्या ६१वा अप्राप्त ।
७४२	६६५८	सुदर्शनश्रेष्ठिकथा		१६वी	३४	
७४३	८५६४ (२)	सुन्दरदासजीको कृत		,,	५२–२०४	
७४४	६५८५	सुभद्रासती चौपई	रूपवल्लभगणि	१८२७	१५	
७४५	१०१८० (५४)	सुभद्रासिज्भाय		१६वीं	१५०–१५२	
७४६	६०११	सुभासित दूहा	जिनरग (?)	१७वीं	१	
७४७	८४३२	सुमतिनाथ गीत		१७२६	२–२३	
७४८	८४०० (३७)	सुमतिनाथस्तवन	पाशचन्द सूरि	१६वीं	८२–८३	
७४६	८८३८	सुरसुन्दरी रास	नयसुन्दर	१६६७	१६	प्रथम पत्र अप्राप्त । लि. क बच्छराज । लि स्था भेलसा ।
७५०	८४२२ (३६)	सुक्षत्रसभ्काय	सहजपुन्दर	१८वीं	११५–११६	लि क अमरसागर ।
७५१	८६१५	सूर्यनाथ मगल (वैद्यक)	रूपनाथ जोगीश्वर	१६०८	५५	लि क छोटेलाल ब्राह्मण ।*
७५२	८४०० (६)	सूरजरो सिलोको		१६वी	१६–२२	
७५३	८४२८(१४)	सूरप्रभुस्तवन		२०वीं	१२६–१३०	
७५४	१०१८० (२६)	सेतुजीस्तवन		१६वीं	६७–६८	
७५५	८४२८(६)	सेत्रुजरासि (शत्रुञ्जय रास)		२०वी	७५–१०६	लि. क प रतनलाल कोटवाल । लि स्था महेन्द्रपुर।
७५६	१०१८० (५२)	सेत्रुजसिद्धस्तवन		१६वीं	१४८ वा	

क्रमाङ्क	ग्रन्थांक	ग्रन्थनाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपिसमय	पत्रसंख्या	विशेष उल्लेखनीय
७५७	८४२८ (२१)	सोलेसतीनी वदना		२०वीं	१–६	लि. स्था मदसौर।
७५८	८८२८	हुसवच्छ चौपई	जिनोदय	१७१४	२२	लि क प. लिखमीचन्द।
७५९	८९०८ (२)	हंसराज बच्छराज चौपई	जिनोदय सूरि	१८९३	१–४३	लि क शिष रूपचन्द गछ (?)
७६०	९०८४	,, ,, ,,	,, ,,	१९३२	४५	लि क प्यारचन्द। लि स्था पावटा ग्राम।
७६१	१००५१ (१)	, ,, ,,		१८८५	१–६५	
७६२	८८४४	,, ,, रास	,, ,,	१७९१	२८	
७६३	८८३७	हुसाउली	असायित	१७वीं	२४	
७६४	९४२२	हमीर रासो	महेश कवि	१९वीं	२६	लि क नैनसुख नाजर।*
७६५	८५०१ (२)	हरिचंद सत		१८वीं	८८–१४९	
७६६	८५५९ (३)	हरिदासजीके पद		१८५५	९७–१८८	
७६७	८२४०	हीरबलमाछी रास	कुशालसयम	१७वी	३५	
७६८	८४४०	हितोपदेश भाषा		१८६३	६८	लि. क चैनकरण। लि स्था रीवा।
७६९	१००५१ (१३)	हीरजीरो तवन		१८८५	१३५–१३६	
७७०	८१५१	त्रयोदश बोल		१८वीं	७	
७७१	१०१८० (२१)	ज्ञानपचबीसी		१९वी	६० वा	
७७२	१०२४८ (१५)	ज्ञान पञ्चमीतप स्तवन		१८१३	११२–११५	
७७३	८४२९ (२५)	ज्ञानपञ्चमीविधि		२०वीं	१०२–१०६	
७७४	८४२९ (११)	ज्ञानपद चैत्यवदन		,,	५१–५२	

* श्री *

परिशिष्ट १

[कतिपय ग्रन्थो का विशेष परिचय]

१८१ ८५६२ (८)* चौहान पृथीराजरो छंद

आदि – सिवि श्रीचुहाण प्रीथीराजरो छंद भुजगी लिष्यो। गजनीरै पातसाह बध कीय्या जदी करणा कीधी जणी सिम्यारो।

परयो गजनी बदनमे छ हथ।
वीचार करै आप करतुत पीथ।
हण्यो दाम कैहेत कैलास बाण।
गज पुन च वड वैरी भराण॥
बडै क न काका चपु पट गाढै।
बिना दोम पटीर सैं अत काढैं॥
वरजत चद चल्यो हु कनोज।
जहा सूर सामत कटै घट फोज॥

अन्त – पवारै गिनाऊ कहा लग तोरे।
करू वीनती डीतनी हाथ जोरै॥
विसास नवि सभर विसारो।
अन अपराध अहक बीमारो॥
अबै होय नीदे न देषो तमामो।
ग्रह्यो ग्राह ज्यु गज माडी नीकामो॥
विना राज आज करै कोन काज।
नीभाहो बीरुद गरीब नवाज॥
सदाडी कहावो करणानीदान।
करो आय महाय कहै चहुआण॥ १

सपुर्ण लीo पo गुलाबराय हरीदास्नो [सोत] सo १७९७ व्रसे।

१९१ ८५६७ (९) जनमबत्तीसी

आदि – ॥र्द॥ सिवस्नी श्रीगणेसाय नम। अथ जनमबतीसी लीष्यते। क्रत पचोली भगतरामजीरी। सवत १७९५ रा भादवा वीद १३ रै दीन ग्रथ कीय्यो।

दुहा – मथुरा जनमे जगतपत, देवग्रभ अवतार।
सकल वीसव सुषि अत भऐ, सुर नर जै जैकार॥ १

---

*प्रथम सख्या सूचीके क्रमाङ्क और द्वितीय सख्या ग्रन्थाङ्क की सूचक है। कोष्ठक के अङ्क गुटका के अन्तर्गत रचना-सख्या के द्योतक हैं।

चुत्रभुजा वर चुत्रभुज, आवध सजुत अनत ।
दाय्यो दरस वसदेवही, देव नमन विहसत ।। २

अन्त – जा हरिकी गम वेद नही अरु सेस महेस न पार लय्यो है ।
जा हरि कारण मुनि तपेसुर, षोजन ही जुग बीत गय्यो है ।
ज्यो हरिनै क्रीपा कर्के नदके ऊर आन ओतार ठय्यो है ।
भगतराम भणै व्रीजमडलमै घर हा घर ओछव होय रय्यो है ।। ८

दुहा – घर घर भइी बधाईय्या, मगल गाइी नार ।
ददकादम पेले स्बै, ओछव भय्यो अपार ।। १
जनमबतीसी ग्रथ कर, ऊपज्यो ईधक हुलास ।
भगतराम भय त्रास तज, कर हरचरण नीवस ।। २

सपुर्ण । स० १७६५ रा भाद्रवा सुद १ सुनी लीषतु पचोली गुलाबराय हर्रा-दासोत ।। श्री ।।

२५०. ८७२२ द्रौपदी चउपई

आदि – ।।र्द०।। सकल जिणेसर वीर जिण, जगनायक जगिसार ।
अष्ट कर्म्महे लइ हाथा निहण्या, दोष अष अट्ठार ।। १
वाणी योयनगामिनी, बुद्धि अगि विशाल ।
ए अध्ययन सोलमिइ भाषि अरथ रसाल ।। २

अन्त – एय चरित्र सभलीय, भवीय तप सयम धरिवु ।
चुथा व्रत पालवा काजइ परमादन करवु ।। ८६
जिम अध्ययन सोलमिए, अगि छति जेहवु ।
चुपई माहि मि कहिउ, ए द्रुपदोनि तेहवु ।। ८७
भणयो गुणयो करी ववेक, मि भाषिउ भोलि ।
मिछा दुक्कड दिउ त्रि सुधि, जो बालिउड हलि ।। ८८

सवत १६५२ वर्षे फागण वदि १४ बुधे लखन इति श्री द्रूपदीनी चुपइ सपूर्ण ।। समाप्त ।।

२७६ ८२५२ दूहा सोरठा किसनियारा

आदि – अथ दुहा सोरठा किमनीयाका
पय तूडणी भरेह, दारू ताय आषै दुनी ।
कुसगत कलक चढेह, काने रहजे किसनीया ।। १
हाथी जाए हेक, लष कूकर लारा लवे ।
वडपण तणे बवेक, कोई न षीजै कीसनिया ।। २

अन्त – राम तणी या रीत, लर्षीयोलो पाए नही ।
पोते राष परतीत, करमां पोहतौ किसनीया ।। १८

निरूपन नाम पचमो तरग ॥ ५ ॥ सवत १९२० पौस सुदि १५ लिपिकृत रामदास काबीर-पथी ॥ सतनाम कवीरकी दया सत सह ॥

४२५ ८४९८ (३) फूलबाईकी परच

आदि – अथ फूलीबाईकी परची लिषते ॥
चौ० ॥ हूँ मलघारी परणी जु नाही । पारब्रम पत मेरै माहि ।
सो कहू जनमै मरै जु नाहो। सुष सागरउ सदा रहाही ॥ १
साषी। जानी आया गौरवै, फूली कीयौ बिचार ।
सब सतारो साहिबौ, सौ मेरो भरतार ॥२

अन्त – के करीऐ उपाय बोहो, कहै लीजौ येक राम ।
पूलीका सब ही सग्घा, मना मनौरथ काम ॥ ७०
चौपई ॥ मम रसावण पूली पीयौ। सतगुर कह्यौ सोई हम कीयौ।
रामजी सौ दूजौ नही कोई। पूली सब जुग देष्यौ जोई ॥ ७१
इति श्री पूलीबाईकी परची सपूर्ण ॥

४२७. ८८३१ बडी ब्रह्मचरी

आदि – ॥दं०॥ गोयम गणहर पाय प्रणमी करी ।
व्रह्मव्रत तवस्यउ हग्ष हीयइ धरी ॥
सूधउ पाली भवसागर तरी ।
पामी पामइ पामिम्यइ शिवपरी ॥

अन्त – एक कह हुवसइ आधइ कर्म्मग्रच्छि सुध्ध करइ ।
अनादि अनइ अनत च उगइ काल अनतउ सचरइ ॥
श्रीपासचदसूरिंद सीमइ श्रीसमरसिंघ इम उचरइ ।
इद्री तणउ करइ सव रहेला शिवरमणी वरइ ॥
इति श्री वडी व्रह्मचरी समाप्त ॥ श्री ॥

४३६ १०१९० बीकाजी तमासा

आदि – श्री गनेसाई नमै । तमासो बीकाजीको लीषते ।
आयो र मेरा चाच बोहोरा, आया रै बोरीका बोरा ।
साजी परन्या छो क कवारा ।
सा परन्यो तो छो पनी सानी मरी गई ।
साजी था को तो फेरू परना द्या ।
हा साब रषबदेवजीकी दुहाई,
ब्याव करो तो बडी बात करो ॥

ख्याल (तमासा) अपूर्ण लिखित है। आगे "जोगीको तमासो", "कृष्ण-ललिता वचन" आदि लिखित हैं।

४४० १००५१ (१६) भवरारी सज्झाय

आदि – श्री गणेशाये नम ।।
भुलो मन भवरा काइ भमो ।
भम्यो दिवस ने रात, मायारो बाध्यो प्राणीयो ।
भुलो परम लजाय, भूलो मन भवरा काई भमे ।।

अन्त – केई चाल्या केई चालसी, केई चालण हार ।
रात दीवस वाटे वहे, परषो नही रे लीगार ।। भुलो०
मेहमाद कहे वमनु बोगीयो, जे कोइ आवे रे साथ ।
आपणा काज काढबो, लेपो माहिब हान ।। भुलो०
ईनी भवरारी सझाय सापूरण ।।

४४१ ८४६८ (१) भक्तविरदावली

ग्रथ का आदि भाग त्रुटित है

अन्त – भगतविछल भगवान, वेद सतन मिल गायो ।
पडी भगत म भीड, जहा प्रभु आप ज आयो ।।
सुरति समृथ अरु जग कहै, अघमोचन भगवान ।
यू दास चरणके सरण पड्यो है, बिडद तुम्हारो जान ।।१६
इति भगत-व्रिदावली सपूर्ण

४४२ ८५६१ (३) भगति भावती ग्रथ

आदि – रामजी मति है जी । श्री गु[रु] भ्याय न्म ।। ग्रथ भगति भावति लिषत ।
सब सननकु नाउ माथा । जा प्रमादतै भयो सुनाथा ।।
भो जल पार गयौ को चाहै । तौ सत चरण रज सीस चढावै ।।१

अन्त – दोहा । नमह राम रामानद, नमह अनतानद ।
चरन कवल रज सीरि घरे, परप[म] नगैसानद ।।२८४

ईति श्री भगति भावती गर्थ (ग्रथ) समापत। सबत ७१५४ [१७५४ ?] बरषे सावण सुधि एकादमी बार सोमाहवार [सोमवार] लीपत स्यामी गरबादासजीका सिष रूपदासजी ।। जगनाथ पठनारथे ।।

४४८ १०१८० (३७) भमर गीता

आदि – समुद्रविजय नृप कुल तिलो [तिलक], मान शिष्यदे नद ।
बालब्रह्मचारी सदा, नमीह नेमि जिणद ।।१
तरिथकर बावीसमो, यादवकुलसिणगार ।
राजमती-मन-वलहो, करुणारस भृगार ।।२

अन्त – कलस । भेद सयम तणा चित आणे । मान सवत तणु एह जाणे ।
वरस बत्रीसतु वरगमूल । भाद्रवे थुण्या प्रभु सानुकूल ।।२७

इति श्री भमरगीता टोडरबध नेमजी स्तवन सपू[र्ण] ।।

४७१.   ७६३४ मयणरेहा

आदि – ।।र्द।।श्री सारदाजौ [जी] नम । दूहा । राग धन्यासी ।
जिण चउवीसइ पय नमी, गणहर गोयम पाय ।
करिसु कवित रूलीयामनउ, गुरू सरसुति सुपासाय ।।१

अन्त – जीपी मयणरेहा राषवी । जिणि सासनि महिमा दाषवी ।
मयनरेहा सुणि तु माहा सती । करउ मगल जयवती सती ।
पनरह सइ सात्रीसइ वरिसि । एह प्रबध कीधु मनि हरमि ।
वाचीक मतिशेषर इम कहइ । भणइ गुणेइ ते सर्व सुष लहइ ।

इति शील विषये मयणरेहा महासती प्रबध समाप्त ग्रथा ग्रथ ५०० । श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० श्री० ।

५०२   ८५६२ (४) मोकमसिंघ सगतावतरो गीत

माहाराजा मोकमसीघजी सगतावत भीडरराज णारो गीत भीमजी अढचा[ढा]रो कह्यो छे ।

गीत – जका जणाणी जीहान बीची, जुगा च्यार ताई जाता ।
घणी घाट बीच बाता, घडाणीग्र अघेस ।
पुराणे सम[भ]ली कथा राषरो[ख्यो] अणी प्राणी,
माहावीर ग्रेकादसी ताणी मोहकमेस ।। १
बांषमी सतारा जेण, धारी देवा दाणवासु,
भोम काज भारी भारी माडाणा भारथ ।
फेरवा पडेवा सीघा सा धका नइ कारे,
नीभै ईकतारी थारी सगतारा नाथ ।।२
जाणगा प्रवीण तोतो मंडली माडाण जाणी,
भाणरो न अण्यो मन ब्रमा भवेस ।
दसु देस दसु द्रगपाल ग्रेतै,
ग्रेका अग्र पुसान्नरा तो दीसा आदेस ।।३
सोर जोर तेज ताप, साम काम सामरै सुमद्र,
नेकी ग्रेक थारी मोहकमेस थारी नेकी,
च्चार भुजा राषि सदा ग्रेका ग्रेकी,
नेकी बीना ग्रेका ग्रेकी कीसार नीरद ।।४

गीत अशुद्ध लिखा हुआ है । भीडर उदयपुर के समीप शक्तावतो का एक प्रमुख स्थान है ।

५१६ ८६४१ रसरतनागर [रसरत्नाकर]

आदि – ॥अथ रसरत्नाकर लिप्यते ॥

दोहा – अलप निरजन एक है, दूजा जानै कोइ ।
वै काहू कीना नई, वह कीना सब कोइ ॥१

चौपई– महमद नवी दीपत उजियारा । जाकै हेत रच्यौ ससारा ।
पुनि ता मित्र च्यारि विधि कीये, पथ चलावनकु पठये ॥२

अन्त – गधक मारि धूलि करि लीजै । सो गधक पारामै दीजै ॥
पारो मरकै होवै बा[छा]र । सोवन होन न लगावै वार ॥

अर्थ – गधक आमला सारानै एक सो पुट काजीकी दीजै । तव गधक मरै । ते गधक पारो सम[सम] मात्रा षरलायै सीशी भर चढावीजै । अग्नि पोहर १२ दीजै । पीत भवति ॥ पु

५२६ ९४८० राजा भोजरास

आदि – ॥द०॥दूहा ॥ श्री सषेसर पासना, पाय कमल पणमेवि ।
सदगुरू चरणइ चित धरी, वलि सरसति समरेवि ॥१
मानिधकारी वलि सगुरू, प्रणमु परमानद ।
युग प्रधान जिनदत्त गुरु, श्री जिनकुसल सुरिंद ।

अन्त – श्री षरतरगछि जाणि दिणद, श्री जिन माणिक्य सुरिदावे ।[१२]
तास सीस वाचक वरदाई, कल्याण धार कहाईवे ॥१३
विनेय तास वाचक पद धारीवे, कल्याण लाभ हितकारीवे ।[१४]
ते सह गुरुना प्रणमीया, वै कुशलधार उवकायावे ॥१५
सवत सतरह सय गुणतीसै, माह वदि तेरस दीसैवे ॥ [१६]
पचम षड थयौ इहा पूरो, श्री सोजित नगर मनूरीवे ॥ [१७]
श्री जिनचदसूरि गुर राजै, रच्यो रास सुष काजैवे ॥ [१८]
शिष्य धमसागर आग्रह करिनै, आ रची वात सुष घरिवैवे ॥ [१९]
आगे का अश त्रुटित है ।

५३३ ९१२८ राधावल्लभका ष्याल (ष्यालायत)

आदि – श्री राधावल्लभोजयति । अथ ष्यालायत लिप्यते ।

परभातका ष्याल

सुतडीनै काहि न छेडौ रूडा म्हानै आलसियौ आवै ।
द्रिग हिय म्हारा पगा छुवायौ या नही वान सुहाव ॥ १
हो लाडीजी थारो औ काई किसडो सुभाव ।
पिय आधीन रहैं कर जोड्या तोही भौह चढाव ॥ २

अन्त –   मेघ मलार

ग्रैसे मेहमै पाईये प्यारो न्यारौ कवहु न कीजीये एक पल ।
गरह लगाये आकै भरि लैहौ पीत बढईया ॥ ४८

राग टोडी

राजि म्हारौ भरियौ माट उठावौ बेटा रावरा ।
जे उठाऊ गोरडी म्हारै जे घरवासौ होय ॥ ४५

पुस्तक के प्रारम्भिक ख्याल प्रतिष्ठान मे प्राप्त महाराजा बहादुरसिंह कृत ख्याल ग्रन्थाङ्क १३७५२ मे मिलते है। विषय, भाषा और शैली की दृष्टि से 'ख्यालायत' के समस्त ख्याल उक्त किशनगढ महाराजा बहादुरसिंह कृत ही ज्ञात होते है। ग्रन्थाङ्क १३७५२ मे सङ्कलित ख्याल भिन्न और लघु रूप मे लिखित होते हुए भी सख्या मे केवल ८१ हैं और 'ख्यालायत' मे प्रत्येक ख्याल पूर्ण रूप मे है। "ख्यालायत" के अन्त मे "पुष्पिका" नही है जिससे कुछ ख्यालो का लेखन से छूट जाना भी सभव है। राजस्थानी भाषा मे लिखित गीत-साहित्य की यह उत्कृष्ट कृति अब तक अज्ञात रही है। महाराजा बहादुरसिंह और इनकी रचनाओ के विषय मे विशेष ज्ञातव्य मेरे द्वारा सम्पादित एव प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित "राजस्थानी साहित्य सग्रह, भाग २" मे पठनीय है। —सम्पादक

५५८   ८१९१ रूपदीप भाषा

आदि – ॥ श्री गणेशाये नमो ॥ अथ पिंगलौक्त रूपदीप भाषा लिष्यते ।

दोहा ॥ शारदा माता तू बडी, सुबुधि देहु दरिहाल ।
पिंगलकी छाया लिये, वरने बावन चाल ॥ १
गुरु गणेशके चरण गहि, हियैं धारिकै विष्नु ।
कुवर भुवानीदासको, जुगति करै जे कृष्न ॥ २
प्राकृतकी वानी कठिन, भाषा सुगम प्रतक्ष ।
कृपारामको कृपासु, कठ करे शव मिक्ष ॥ ३

अन्त – ॥ सोरठा ॥ द्विज पुहकर ख्यात, तिसमैं गोत कटारिया ।
सुनि प्राकृतसु वात, तैमै ही भाषा करी ॥ ५४

॥ दुहा ॥ वावन वरनी चाल सब, जैसी मोमैं बुध ।
भूल भेद जाको लहो, करो कवीस्वर सुध ॥ ५५
सवत सत्रैसै वरस, ऊर विहतर पाय ।
भाद्रव सुद दुति गुरु, भयो ग्रथ सुष पाय ॥ ५३ [५६]

इति श्री रूपदीपक भाषा सपूर्ण ॥ लिषित रामदास कवीरपथी । सवत १९२६ श्रावण वदि ११ बुधवारे ॥ सतनाम कवीरकी दया सत महतकी दया सु ॥ १ ॥

८३९   ७८७५ शत्रुभेद

रचना का आदि भाग पत्र स० १ के अभाव मे अप्राप्य है।

अन्त – राजभृत्य होय ते ससुझइने लीजिय ।
जू मत्रीजन होय सो अवस्य पहचानिये ।। ४

दोहा ।। सवत अठारह सै विते,चौपन मृगसर मास ।
शुक्ल पप्य एकादसी, कीनो ग्रथ प्रकास ।। ५

चौपही ।। क्रप्णादुगर्मै ग्रथ बनायो । जैसो मति मेरीमै आयो ।।
नप वहादुरकै विरद कुमार । तिनकै सिघ प्रताप निहार ।।
तिनकै कवर दोय सुषदाई । इक कल्यान अरु केमरभाई ।।
तिनकै मत्री नीति प्रकास । किग्रो ग्रथ यह जोगीदास ।।

इति श्री सत्रुभेद ग्रथ मोहनौत जोगीदास कृत सपूर्णम । शुभमस्तु । सवत १८६२ कातिक वदि १२ ।

विशेष—प्रस्तुत रचना किशनगढ नरेश महाराजा वहादुरसिंह के पौत्र कल्याणसिंह और केसरसिंह के मत्री जोगीदास मोहनौत कृत है और रचनाकाल के ८ वष पश्चात् लिखित होने से महत्त्वपूर्ण है ।

७५१. ८६१५ सूर्यनाथमगल, वैद्यक ग्रथ

आदि – । श्री गणेशाय नम ।। अथ सूर्यनाथमगल वैद्यक ग्रथमेंथि[थी] चिकित्सा लिप्यते ।

पहले [illegible] के कहू, ज शास्त्र विचार
फिर असाध्यके दोहरे, अब कहिय नीरधार ।। १

अन्त – निब त्वचा प पति वासी पाणीसू नेत्राजन जल प्रवा[ह] हाय
मस ° निलो यथा पाउ निबुका रससू लावै वीमचा द्राद जाय ।

इति श्री दीपनाथ सिष्य रूपनाथ जोगीस्वर निर्वाण विरचिताया रूपनाथ मगल समाप्त । सवत १९०८ भादवा वुदि ७ सोमवासरे लिखित ब्राह्मण छोटेलाल पठनार्थ पडत भगवानदासज' ।

७६४ ६४२२ हमीर रासो

आदि – ।। श्री गणेशाय नम[ ] । श्री सरस्वतीन्म[नम.] । श्री गुरुभ्यो नम [श्री गुरुभ्योनम] अथ हम्मीररासो लिक्षते [लिप्यते] ।।

दोहा । श्री गनेस गुरु सरस्वती, बुधि बानीके दानि ।
कबि महेस स बरनन करत, हट हमीरको जानि ।। १
पहिलै साहि सुमरियै, सवको सिरजनहार ।
आदि भवानी अब्बिका[अम्बिका], श[ा]रदै सुरति सम्हार ।

अन्त – ।। छद ।। मिलै राव पतिसाहि, छीर ज्यौ नीर बहाये ।
जो पारसकौ मिलत लोहो, कचन हो आये ।।
अलादीन हमीर से हूये न अब कोई होय ।
कवि महेस ईम उचर[रै] वे बसे सुरग सब कोय ।। ३९५

।। दोहा ।। कवि महेस बननै [वर्णन]कीयो, रासो राव हमीर ।
भूल चूक ज्यौ होय तो, माफ करो तकसीर ।। ३९६

ईती श्री राव हमीरको रासो सपूर्ण । लीखीत नाजर न[नै]णसुष न बाच बच्यार सुज्या राम राम राम राम बचजो जी ।।

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

—००:०:००—

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—**पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य**

++++++++++

प्रकाशित ग्रन्थ

१ संस्कृत

१ **प्रमाणमंजरी**, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक — मीमांसान्यायकेसरी पं० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर। मूल्य—६.००

२ **यन्त्रराजरचना**, महाराजा सवाईजयसिंह कारित। सम्पादक—स्व० पं० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर। मूल्य—१.७५

३ **महर्षिकुलवैभवम्**, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, सम्पादक—म०म० पं० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी। मूल्य—१०.७५

४ **तर्कसंग्रह**, अन्नभट्टकृत, सम्पादक—डॉ जितेन्द्र जेटली, एम ए, पी-एच डी, मूल्य—३.००

५ **कारकसंबधोद्योत**, पं० रभसनन्दीकृत, सम्पादक—डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी-एच डी.। मूल्य—१.७५

६ **वृत्तिदीपिका**, मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक—स्व पं पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—२.००

७ **शब्दरत्नप्रदीप**, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक—डॉ हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी-एच डी। मूल्य—२.००

८ **कृष्णगीति**, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच डी, डी लिट्। मूल्य—१.७५

९ **नृत्तसंग्रह**, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच डी, डी लिट्। मूल्य—१.७५

१०. **शृङ्गारहारावली**, श्रीहर्षकविरचित, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच डी, लिट्। मूल्य—२.७५

११ **राजविनोद महाकाव्य**, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक—पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम ए, उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—२.२५

१२ **चक्रपाणिविजय महाकाव्य**, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक—केशवराम काशीराम शास्त्री मूल्य—३.५०

१३. **नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग)**, महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक—प्रो रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच. डी., डी लिट्। मूल्य—३.७५

१४. **उक्तिरत्नाकर**, साधुसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य श्रीजिनविजयमुनि, सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—४.७५

१५ **दुर्गापुष्पाञ्जलि**, म०म० पं० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक—पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—४.२५

१६ **कर्णकुतूहल**, महाकवि भोलानाथविरचित, सम्पादक—पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए, उप-सञ्चालक राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। इन्हीं कविवर की अपर कृति श्रीकृष्णलीलामृतसहित। मूल्य—१.५०

१७ **ईश्वरविलासमहाकाव्यम्**, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक—भट्ट श्रीमथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। मूल्य—११.५

प्रेसों मे छप रहे ग्रंथ

सस्कृत

१ शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मरचित, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय ।
२. त्रिपुराभारतीलघुस्तव, धर्माचार्यप्रणीत, सम्पादक–मुनि श्रीजिनविजय
३ करुणामृतप्रपा भट्ट सोमेश्वरविनिर्मित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
४. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर सग्रामसिहरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
५ पदार्थरत्नमजूषा, प० कृष्णमिश्रविरचित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
६. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक सम्पा०–श्री एम सी मोदी ।
७ नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री बी जे साडेसरा ।
८ चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०–श्री बी डी दोशी ।
९ वृत्तजातिसमुच्चय, कविविरहाङ्करचित, सम्पा०–श्री एच डी वेलणकर ।
१० कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक ,, ,, ,,
११ स्वयभूछन्द, कविस्वयभूरचित ,, ,, ,,
१२ प्राकृतानन्द, रघुनाथकविरचित, सम्पा०–मुनि श्री जिनविजय ।
१३ कविकौस्तुभ, प० रघुनाथरचित, ,, श्री एम एन गोरी ।
१४ एकाक्षर नाममाला—सम्पादक–मुनि श्री रमणीकविजयजी ।
१५ नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुभकर्णप्रणीत, सम्पा०–डॉ प्रियबाला शाह
१६ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०–डॉ श्रीदशरथ शर्मा ।
१७ हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजयजी ।
१८ रत्नपरीक्षादि, ठक्कुर फेरूरचित ,, ,,
१९ स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०–डॉ० आत्माराम जाजोदिया ।
२० वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०–डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल ।
२१ घटखर्परादि पचलघुकाव्यानि ,, प० अमृतलाल मोहनलाल ।
२२ भुवनदीपक, यावनाचार्यकृत, सम्पा०–प० श्रीपुरुषोत्तमभट्ट ।
२३ वृत्तमुक्तावली, श्रीकृष्ण भट्ट गुम्फित, सम्पा० प० श्री मथुरानाथ भट्ट

राजस्थानी और हिन्दी

२४ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग २, मुहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया ।
२५ गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत ,, श्रीउदयसिह भटनागर ।
२६ राजस्थानमें सस्कृत साहित्यकी खोज एस आर भाण्डारकर, हिन्दीअनुवादक–श्रीब्रह्मदत्त त्रिवदी ।
२७ राठौडारी वशावली, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
२८ सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पादक–मुनिश्रीजिनविजय ।
२९ मीरा-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा सकलित, सम्पा०–मुनि श्रीजिनविजय ।
३० राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग ३, सपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी ।
३१ सूरजप्रकास, भाग २, कविया करणीदानकृत, सम्पा०–श्रीसीताराम लाळस ।
३२ मत्स्य प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन—डॉ० मोतीलाल गुप्त ।
३३ रुक्मिणी-हरण, सायाजी भूला कृत, सम्पा० श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ।

विशेष– पुस्तक-विक्रेताओ को २५% कमीशन दिया जाता है ।